दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

उत्तर प्रदेश

उद्घोष

त्रैमासिक ई-पत्रिका

पंचम संस्करण

अप्रैल - जून 2022

सम्पादकीय समिति

डॉ नृपेन्द्र सिंह
अध्यक्ष, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
संरक्षक : उद्‌घोष, त्रैमासिक ई–पत्रिका
सम्पर्क सूत्र : 9259049509

सम्पादक

श्री नरेन्द्र विक्रम सिंह
सम्पर्क सूत्र : 7398372302

श्री भागवत शुक्ल
सम्पर्क सूत्र : 9936595999

सह-सम्पादक

श्रीमती नीलू सिंह
जनपद न्यायालय, लखनऊ

श्रीमती मोनिका शर्मा
जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

श्री सर्वेश कुमार गौतम
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री उमेश चन्द्र जायसवाल
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री ऋषि यादव
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

सदस्य-सम्पादकीय समिति

श्री महेश्वर किशोर सिंह
जनपद न्यायालय, गोरखपुर

श्री अरविन्द कुमार मिश्र
जनपद न्यायालय, इलाहाबाद

श्रीमती प्रीति पाठक
जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

श्री केदारनाथ त्रिपाठी
जनपद न्यायालय, वाराणसी

श्री राजकुमार खरवार
जनपद न्यायालय, बांदा

श्री भवानी प्रसाद तिवारी
जनपद न्यायालय, महाराजगंज

श्रीमती प्रियंका बाजपेई
जनपद न्यायालय, मुजफ्फरनगर

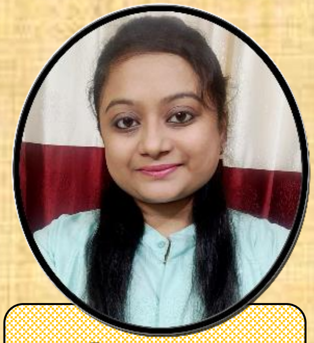

सुश्री खुशबू गुप्ता
जनपद न्यायालय, कानपुर नगर

आप सबके समक्ष हम सब पुनः **`उद्घोष'** का पंचम अंक लेकर उपस्थित हैं, हमारी त्रैमासिक ई–पत्रिका को संकलित करने वाले संपादक मण्डल का हृदय से आभार, कि आप सबने मिलकर इस अंक को भी बहुत ही बेहतरीन तरीके से संकलित किया है। इस अंक में सबसे विशेष हैं हमारे संपादक मण्डल में मातृ शक्तियों की उपस्थिति, आपकी उपस्थिति हेतु मैं आभारी हूँ।

इस अंक में भी हमारे लेखकों की कलम से उनके उद्गार प्रस्फुटित हुए हैं शानदार रचनाएं आपको निश्चित ही पसंद आएंगी। मैं समस्त लेखकों और लेखिकाओं का भी आभारी हूँ कि वे अपनी मौलिक रचनाएं हमें प्रकाशन हेतु प्रेषित कर रहे हैं। यदि आपकी रचनात्मकता हमारा साथ न दे तो हम उद्घोष का प्रकाशन न कर पाएं। सुधी पाठकों का भी आभार जो आप सब इस पत्रिका को हाथों हाथ लेते हैं।

हम सबने मिलकर संघ में रचनात्मकता का इतिहास रच दिया है समाज अब तक वारंट, बयान, आदेश पत्रों पर चलने वाली कलम को ही जानता था लेकिन उद्घोष ने ये बता दिया कि वही कलमें कविताओं का सृजन भी करती है। हमारे परिवार के नन्हे बच्चों को ढ़ेर सारा प्यार, आप सृजन करिए हम प्रकाशन करेंगे।

संगठन के उद्घोष के बढ़ते स्वरूप पर वसीम बरेलवी की पंक्तियां सहसा याद आ गई.....

अपने हर हर लफ्ज का खुद आइना हो जाऊँगा!
उस को छोटा कह के मैं कैसे बड़ा हो जाऊँगा!!

तुम गिराने में लगे थे तुम ने सोचा ही नहीं!
मैं गिरा तो मसअला बन कर खड़ा हो जाऊँगा!!

मुझ को चलने दो अकेला, है अभी मेरा सफर!
रास्ता रोका गया तो काफिला हो जाऊँगा !!

आपका ......

(नरेन्द्र विक्रम सिंह)

प्रधान सम्पादक

उत्तर प्रदेश शासन के मुख्य सचिव माननीय श्री दुर्गा शंकर मिश्र, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रांतीय महासचिव एवं साहित्यकार श्री सुधीर विद्यार्थी जी को दिनांक 11-06-2022 को सम्मानित करते हुए।

काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के जन्मदिवस 11 जून 2022 को देर रात्रि, शहीद संग्रहालय शाहजहाँपुर में संपन्न हुए गरिमापूर्ण विशाल आयोजन में दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रांतीय महासचिव एवं साहित्यकार सुधीर विद्यार्थी को उनके भारतीय क्रांतिकारी के इतिहास पर समग्र लेखन के लिए उत्तर प्रदेश शासन के मुख्य सचिव माननीय श्री दुर्गा शंकर मिश्र ने सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री विद्यार्थी ने अपने सम्बोधन में बिस्मिल की क्रांतिकारी चेतना के साथ स्मरण करते हुए रेखांकित किया कि इस क्रांतिकारी से तुर्की के शासक कमाल पाशा बेहद प्रभावित थे जिन्होंने अपने देश में 'बिस्मिल शहर' बसाया। बीसलपुर तहसील के भदारी गांव के निवासी श्री विद्यार्थी की प्रदेश सरकार के संसदीय कार्य एवं वित्त मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना ने श्री विद्यार्थी को बधाई देते हुए शहीद संग्रहालय में उनके योगदान की सराहना की।

संगठन की आवश्यकता क्यों ? हमारा संगठन हमारी समस्या और उनका निदान

आज के समाज में यदि कोई भी व्यक्ति कोई भी कार्य करता है तो वहां पर कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां एवं अन्य प्रकार की कठिनाइयां अनुभव की जाती है। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए अथवा इनका समाधान ढूंढने लिए एक मंच की आवश्यकता होती है इसीलिए कोई भी समाज अपनी समस्याओं के समाधान हेतु संगठन बनाता है।जो समाज जितना संगठित है वह उतनी ही सरलता से अपनी समस्याओं का समाधान खोज सकता है। इसलिए एक सुसंगठित संगठन की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व अंग्रेजी शासनकाल में न्यायालयों का गठन हो चुका था इसी क्रम में दीवानी अदालतों का गठन उत्तर प्रदेश में हुआ। सन 1922 में अदालती कर्मचारियों ने अपना एक संगठन बनाया जिसे अंग्रेजी शासन काल में सन 1927 - 28 में मान्यता प्राप्त हुई। प्रदेश में तृतीय श्रेणी कर्मचारियों का संगठन दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के नाम से बनाया गया था जो आज भी इसी नाम से कार्य कर रहा है समय-समय पर इसके अधिवेशन होते रहे जिसमें कर्मचारी गण अपने पदाधिकारियों का चयन करते हैं और अपनी समस्याओं का मांग पत्र तैयार करके माननीय न्यायालय अथवा उत्तर प्रदेश शासन को उसके निराकरण हेतु प्रस्तुत करते रहे हैं। इस प्रकार से कर्मचारियों की समस्याओं का कुछ न कुछ निदान होता रहा है। वर्तमान समय में जो मुख्य समस्याएं न्यायालय कर्मचारियों के संबंध में हैं उनको निम्न प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है :-

- माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित प्रथम राष्ट्रीय वेतन आयोग (शेट्टी कमीशन) की अनुशंसाओं को विभिन्न राज्यों द्वारा पूर्णतया आज तक लागू न किया जाना और द्वितीय तृतीय राष्ट्रीय न्यायिक वेतन आयोग में अधीनस्थ न्यायालय के कर्मचारियों को सम्मिलित न किया जाना।
- मानक के अनुसार कार्य वितरण ना होना और तदनुसार पदों का सृजन न होना।
- प्रदेश की अधीनस्थ न्यायालयों में कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु प्रभावी समितियों का गठन ना होना।
- प्रदेश के न्यायालयों में कार्य का उचित वातावरण न होना यथा पत्रावलियों के रखने के लिए उचित व्यवस्था न होना, बैठने के स्थान की कमी, शौचालय तथा पेयजल की असुविधा का होना।
- अधीनस्थ न्यायालयों में पत्रावलियों का संरक्षण लिपिक तथा रीडर की मध्य होता है परंतु यदि कोई प्रपत्र पत्रावली से खो जाता है तो उसकी सारी जिम्मेदारी लिपिक की ही होती है जबकि वह पत्रावली पेशकार वकील पक्षकार तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के बीच रहती है प्रपत्र खोलें पर जिम्मेदारी संरक्षित करने वाले कर्मचारी की होती है परिणाम स्वरूप उसके विरुद्ध विभागीय जांच जारी हो जाती है और उसकी प्रोन्नति और वेतन वृद्धि तक रुक जाती है बढ़ती हुई मुकदमों की संख्या को देखते हुए इस संबंध में कोई प्रभावी कार्यवाही की आवश्यकता है।
- अधीनस्थ न्यायालयों में प्रोन्नति के अवसर कम है और जो भी अवसर उपलब्ध है उनपर विभागीय समितियां समय से निर्णय नहीं लेती जिस कारण संबंधित कर्मचारी बिना प्रोन्नति ही सेवानिवृत्त हो जाता है अथवा घुटते-घुटते कार्य करने को विवश रहता है।

- पिछले कुछ समय से माननीय उच्च न्यायालय ने तृतीय चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भर्ती का कार्य अपने अधीन लेकर बहुत बड़ी समस्या का सूत्रपात किया है। नये नये न्यायालय का गठन किया है परंतु कर्मचारियों की पर्याप्त संख्या का सृजन नहीं किया है परिणाम स्वरूप वर्तमान न्यायालय की कर्मचारियों को ही उन न्यायालयों से संबद्ध कर दिया गया है स्थिति यह है कि ऐसे कर्मचारियों को अपने पदीय दायित्वों के साथ में नये न्यायालयों का कार्य भी करना पड़ता है और ऐसे में त्रुटियां होना संभव है और उसके परिणाम भी कर्मचारियों को भोगना पड़ता है।
- बहुत से पारिवारिक न्यायालयों, मोटर वाहन दुर्घटना दावा न्यायालयों का सृजन किया गया परंतु कर्मचारियों की भर्ती मानक के अनुसार नहीं की गई। न्यायिक अधिकारी तो जिला स्तर के बनाए गए परंतु कर्मचारियों के निचले स्तर के पदों का सृजन किया गया। इस इस संबंध में न्यायमूर्ति के एल शर्मा समिति की अनुशंसाओं की उपेक्षा गई।
- तदर्थ कर्मचारियों का विनियमितिकरण
- समय से प्रोन्नति न होना
- मृतक आश्रित नियमावली के अन्तर्गत अनुकम्पा नियुक्ति समय से तथा योग्यता के अनुसार न होना।

सांगठनिक समस्याऐं

- शाखाओं में समय से शाखा का गठन होना।
- सभी सदस्यों का संगठन में रूचि न लेना
- शाखाओं, सदस्यों द्वारा आर्थिक सहयोग न करना

पूर्व में उच्च न्यायालय इलाहाबाद प्रशासनिक सम्मेलन आयोजित करता था जिसमें अधीनस्थ न्यायालय के कर्मचारी संगठनों के सभी भाग लेते थे और समय-समय पर आने वाली उनकी समस्याओं पर उच्चस्तरीय निर्णय होते थे पर कुछ समय से इस प्रकार की व्यवस्था बंद हो गई है।

संगठन को सुसंगठित करने के लिए शाखाओं का गठन और सक्रिय किए जाने की आवश्यकता है। सदस्यों, शाखाओं से आर्थिक सहयोग मिलना आवश्यक है और उपर वर्णित विन्दुंओ पर सकारात्मक और सक्रिय निर्णय लेकर संगठन को सशक्त सुसंगठित किया जा सकता है और कर्मचारियों की समस्याओं का निदान खोजा जा सकता है।

डॉ0 विजयकुमार

पूर्व महासचिव/अध्यक्ष

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

सेवानिवृत्त, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

जनपद न्यायालय, लखनऊ।

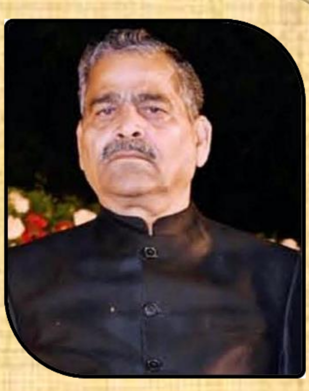

प्रदेश न्ययालय कर्मचारियों के नाम खुला पत्र, अच्छे सोच के नेताओं को पदाधिकारी चुनना उत्तम, दीवानी कर्मचारी प्रत्येक जिलों में अनेक गजटेड ऑफीसर के पद प्राप्त करेगा, कर्मचारियों को पूरी निष्ठा ईमानदारी से कार्यालय, संघ और घर के सेवा में समर्पित होना उनके विकास का कारण बनेगा

-पंडित अनिल शुक्ल

प्रिय प्रादेशिक न्ययालय कर्मचारी साथियों, ईश्वर आप का भला करे "ॐ", प्रांत के चुनाव में तो अभी वक्त है सो समय है! लेकिन प्रांत को यह नोटिस जारी कर देना चाहिए कि कौन कौन जिले अधिवेशन अपने जिले में कराना चाहते है ? यह जरूर प्रान्त का काम है कि अधिवेशन कराने की चाहत रखने वाले जिले में यात्रा मार्ग न्यायोचित है अथवा नहीं क्योंकि अभी संपूर्ण उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों से मतदान पर चर्चा प्रत्यक्ष तो मीटिंग में हुईं नहीं और न ही किसी जिले ने जहां तक मुझे जानकारी है ने प्रस्ताव ही दिया है। सिर्फ रायबरेली के पराजित उम्मीदवार श्री राजीव मिश्र ने चैनल पर यह बात जरूर कही, अगर यह रायबरेली जिले के कर्मचारियों का सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित हो कर रजिस्टर्ड लेटर से संघ को प्राप्त कराया जाता तो कार्यकारिणी विचार करने के लिए बाध्य हो सकती थी। लखनऊ के विगत चुनाव में पराजित उम्मीद्वार प्रिय संजीव कुमार जी का प्रांत के चुनाव की बात तो निरर्थक प्रतीत होती है क्योंकि अभी प्रांत का समय शेष है ! प्रिय श्री संजीव कुमार, (लखनऊ) जिनका यह आरोप है कि लखनऊ में चुनाव नहीं कराए जाते में बल दिखाई देता है। लखनऊ शाखा बाराबंकी का गुरू है जब बाराबंकी में प्रांत के उपाध्यक्ष सैय्यद मोहम्मद ताहा साहब ने बाराबंकी में सर्वसम्मत से ही सही चुनाव कराकर शाखा अध्यक्ष बनने के जोड़ तोड़ में सफल हो सकते तो क्या लखनऊ में ऐसे कोई कर्मचारी राजनितिक व्यक्तित्व नहीं है ? मतदान में तो झंझट होता है सर्वसम्मत से ही लखनऊ शाखा को रिन्यू कर लेते फिल हाल ईश्वर कृपा से लखनऊ भविष्य में पुनः अपना स्थान संघ में सुरक्षित कर सकने में सक्षम सिद्ध हो सकता है ? लेकिन जब वहां बाबू नंद कुमार श्रीवास्तव, अतहर अली या डाक्टर विजय कुमार, कुलदीप कुमार जैसे योग्य नेतृत्व का उदय हो या पुनः ऊर्जा जागृत हो प्रिय साथियों प्रदेस भर से हमसे वार्ता जारी है कि आपने चुनाव में गजटेड ऑफीसर की बात की थी अभी तक की क्या प्रगति है ? प्रिय दोस्तों, निश्चय ही हमें न पदाधिकारी बनना है और न ही गजटेड ऑफीसर लेकिन जहां एस० ए० ओ० (परिवर्तित सी० ए० ओ०) के पद के गठन में हमने महती भूमिका निभाया था ही नहीं बल्कि पूर्व माननीय चीफ से आर्डर कराया था सो मै वचनबद्ध हूं कि भविष्य में हमारा प्रयास जारी है। मैं पदाधिकारी से संपर्क कर सकता हूं तब तक जबतक संघ मुझे माननीय चीफ व माननीय चीफ मिनिस्टर से बात करने के लिए अधिकृत करते हुए पूर्ण स्वतंत्रता न दे ! हमने वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष डाक्टर नृपेंद्र से बात की थी, उनके अनुसार हाइकोर्ट जिला जजों से गजटेड ऑफीसर के लिए रिमाइंडर जारी करने की बात उनसे कही थी। यह फोन पर उन्होनें बताया था मरता क्या न करता विश्वास तो उन्हीं पर करना है क्योंकि हमारे ही सुझाव पर आपके अधिकतम मतों से विजई उम्मीदवार प्रिय नरेन्द्र विक्रम सिंह जी ने ही विगत चुनाव के पूर्व यह पत्र हाईकोर्ट को लिखा था जिससे उम्मीद बंधी थी कि हाईकोर्ट के लेटर पर प्रदेश दीवानी कर्मचारियों के भी अच्छे दिन आयेगें। इसी उम्मीद पर और तेज वर्क होगा इस उम्मीद पर हमने आप लोगों के प्रतिनिधियों से प्रिय डाक्टर नृपेंद्र सिंह की अध्यक्षता और प्रिय नरेंद्र विक्रम सिंह के नेतृत्व वाले संघ को पुनः सत्ता में लाने के लिए अपील किया था और आप के प्रतिनिधियों ने हमारी योजनाओं को कर्मचारी हित में जानते मानते हुऐ हमें सफलता दिया था। मैं प्रदेश के सम्पूर्ण कर्मचारियों के प्रति पूरी वचनबद्धता से कह रहा हूं कि मेरे न प्रिय बृज किशोर शर्मा जी दुश्मन थे और न अनुराग लेकिन मेरी वार्ता चुकी प्रिय नरेन्द्र विक्रम

जी से चल रही थी गजटेड ऑफीसर कि तो मै कैसे डाक्टर अनुराग को सपोर्ट कर देता, इस लिए हमने वर्तमान पदाधिकारियों को सपोर्ट किया, हालांकि मै यह अनुभव कर रहा हूं कि आपके प्रांतीय अध्यक्ष जी कोरोना काल खत्म होने के बाद भी मीटिंग आयोजित नहीं कर पा रहे हैं। हालाकि उन्होनें हमसे कहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय पाठक जी के यहां आपको चलना है, परन्तु नियति को कौन टाल सकता है ? वह हमको बिना बताए आप लोगों की ओर से अकेले ही गुलदस्ता देने चले गए, उन्हे कम से कम महासचिव को तो ले जाना चाहिए था और अकेले आने के लिए सिक्योरिटी बाध्य कर रही थी तो हमे बताते, संविधान के प्रदत्त अधिकार के अंतर्गत हम मिनिमम तीन नेताओं को परमिट कराने का प्रयास करते विथ मीडिया देखते, अगर वह मात्र जीत की बधाई थी तो अबतक एक प्रतिनिधि मंडल पुनः मिलना चाहिए था। चूंकि हम अब मार्गदर्शक भी नहीं है सो हम उन्हे बाध्य तो नहीं कर सकते, प्रिय साथियों लेकिन आने वाले अधिवेशन में भले मुझे मंच से बोलने न दिया जाय लेकिन हम अपने कर्मचारियों के प्रतिनिधियों से वार्ता कर सकते हैं। हम उसी नेता को मत देने की आपसे अपील करेंगे जो प्रति जाजियो में अनेक गजटेड ऑफीसर की बात करेगा और वर्क लोड को कम करने के क्या फार्मूले उस नेता के पास है ? मै यह भी प्रयास कर रहा था कि समस्या दूर हो या मंजिल दूर ही रहे लेकिन प्रांतीय अध्यक्ष और महासचिव विभिन्न टोलियों में प्रदेश का दौरा तो करें और उस जिले के विद्वान जिला जज साहब से मिलकर अपने कर्मचारियों की तरफ से बात करे समस्या की बात छोड़िए कम से कम यह तो एहसास होता कि संघ के कोई नेता भी है, कुछ जिला जज साहब को चिट्ठी लिखी जाती जैसे प्रिय महासचिव जी लिखते है हाईकोर्ट को लेकिन कुछ तो प्रयास करने होगे ? क्योंकि हम संघ के सेंचुरी वर्ष की ओर निरंतर बढ़ रहे है ! हम क्या इतिहास छोड़ कर जायेंगे कि आए तो तमाम राजा लेकिन धनुष दीवानी का कोई नहीं तोड़ पाया ? प्रिय साथियों संघ का पद मात्र लेकर समय पास करने के लिए नहीं होता और न अपनी शान के लिए होता और न अपनी नौकरी गवाने के लिए या ट्रांसफर होने के लिए होता है, बल्कि यह पद इस लिए मिलता है कि कर्मचारियों के पैसे से अधिवेशन आयोजित कर उन नेताओ को यह पद मिलना चाहिए जिनकी सोच कर्मचारियों के विकास हेतु हो, वे उनके समस्याओं को मर्यादित ढंग से उच्चाधिकारियों शासन हाईकोर्ट प्रशासन से वार्ता लाप करने उनके समक्ष तर्क और लेटेस्ट लॉ आधुनिक युग के रख कर येन-केन-प्रकारेण अपने कर्मचारियों की समस्याओं को सुलझा लेने की उनमें काबिलियत हो 'यहां दादा गिरी से जुडिशियरी या गवर्मेंट से आप का कोई न तो नाता है और न कोई नेता कभी इसमें सक्षम ही नहीं हो सकता और न ऐसा सोचना भी न्यायोचित नहीं हैं, और आपसे कोई कहे भी नेता तो आप उसपर विश्वास न करना हमें आवश्यक्ता है। ऐसे नेताओं की जो विधि तर्क और ज्ञान पूर्वक आपके हित के सोच से खोज करें और उन्हे रिटन में लेकर कागज प्रारंभ करे दौड़ा दे डिस्पोजल तो होगा ही अर्थात् आप सभी गजटेड ऑफीसर अनेक की संख्या में निश्चय बनेंगे हम नही बने तो क्या हुआ हमारा दूसरा भाई तो बनेगा उसका परिवार खुशहाल होगा तो भी हमे या आपके पूर्वजों को खुशी होगी जरूरत है नेतागिरी की नही बल्कि नेताओ में अच्छी सोच की अपने वर्ग के हित के लिए समर्पित होने की यह इस लिए भी आवश्यक है कि कार्य विधि बदलने वाली है।

प्रिय साथियों जैसा मैंने पिछली टिप्पणी में प्वाइंट वाइस लिखा था कि कई मामलों में वर्तमान संघ ने अपको ऐनी-वे अपने पदाधिकारियों की सहायता से आपसे चंदा लेकर आपकी सहायता करने में आपको कामयाबी हासिल कराई। जिसमे इलाहाबाद वाले श्री अभिषेक सिंह (वाइस प्रेसिडेंट) का नाम काफी उछला था उनकी सराहना हुई थी । इसी प्रकार महासचिव जी भी काफी विरोध और कर्मचारियों के वर्क लोड के दबाव के बाद भी एक्टिव

है व्यक्तिगत कोई किसी की किसी से वैमनश्य नहीं है लेकिन यह याद रखना जरूरी है कि जोड़ तोड़ कर वोट पाना आसान है, पर कर्मचारियों की कसौटी पर खरा उतरना बड़ी चुनौती होती है। इसमें वही सफल होता है जिसकी सोच उत्तम होती है वर्तमान अध्यक्ष और महासचिव जी को मेरा सुझाव कर्मचारी हित में है कि महीना पन्द्रह दिन की ई०एल० लेकर गजटेड ऑफीसर के पद लाने के प्रयास कर ले और कुछ दौरा करे अखबारों, रेडियो, टीवी चौनलों में अपनी बात रखे जिससे आपके प्रयास सार्थक समझे जाय, एक सभी पक्ष को लेकर दौरा कमेटी गठित करें जो दौरा करें और जिस जिले का दौरा करें वहां के विद्वान् जिला जज से व्यवहारिक मुलाकात कर जिले की समस्याओं पर उनका ध्यान केंद्रित करें, केवल प्रशासनिक बिल या सी० ए० ओ० को टार्गेट न करें, यह सब सदियों से चलता रहा है जब आप वहा पहुचेंगे तो आप भी वही करेंगे लेकिन संघ के लोग जब प्रशासन में पहुचेंगे तो संघ यही अपेक्षा करेगा कि यह पदाधिकारी रह चुका है, यह लिनियोंट तो रहेगा ही और होना चाहिए प्रिय दोस्तो विद्वान जिला जज चाहते है प्रशासन उत्तम हो इसका मतलब यह नहीं कि वो आपके दुश्मन है। अगर आप उस जगह होगे तो जो वो चाहते आप भी चाहेंगे लेकिन सभी को निष्ठा से कार्यालय और संघ में दोनो जगह काम करने की जरूरत है तभी आपका कार्यालय, संघ और घर उत्तम प्रदर्शन दे सकता है इन्ही शब्दो के साथ इस अपेक्षा से कि उक्त तीनों स्थलों पर आप सभी मेहनत ईमानदारी से अपना संपादन सुनिश्चित करेंगे तो निश्चय आज नहीं तो कल जरूर जिले प्रान्त में संघ के पदाधिकारी, कार्यालय में गजटेड ऑफीसर होते हुऐ सी० ई० ओ० और घर में बेहतरीन गृह मुखिया बनेंगे। हम अपनी टिप्पणी को रिवाइज नहीं कर पा रहे है कोई त्रुटि हो भूल हो तो उसे अन्यथा न लीजिएगा, आपके और आपके परिवार की खुशहाली में ही हमारी खुशहाली है। हम जबतक जहां भी जीवित रहेंगे चाहें जिस पद या व्यवसाय में रहेंगे अध्यक्ष महासचिव तो नहीं बन सकें लेकिन आपके हित के लिए प्रयास करते रहेंगें। हम अपेक्षा करना चाहेंगे कि हमारे सोच को जो निः-स्वार्थ है पक्षपात से परे है संपूर्ण उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों में, अधिकारियों में, और माननीय उच्च न्यायालय और शासन तक फारवर्ड, प्रिंट निकाल कर वितरित, अथवा वर्णित स्थानों तक कुछ रूपए लगाकर प्रेषित करने या प्रेस रिपोर्ट्स को देने की कृपा करें, जिससे आपके भलाई के प्रति सोच की संख्या बढ़ाई जा सके, और कुछ कार्यवाही आगे बढ़ सकें हम किसी के प्रतिद्वंदी नहीं संविधान हमें अपको आपके परिवार के जीवन को और देश की अधीनस्थ न्यायालय में कर्मचारियों से अपना कार्य सुचारु रूप से करने, अनुशासन बनाए रखने, घर परिवार की देख भाल ठीक से करने और अपने संघ को मजबूत बनाने के लिए आपसी तालमेल बनाने की अपील करने की यह इजाजत एक पूर्व कर्मचारी नेता, नागरिक और कानूनी सलाहकार के रूप में पूरी स्वतंत्रता देता है ऐसा मेरा मानना है!

शुभकामनाओं सहित "**ॐ नमः शिवाय**"

आपका अब तक का अनोखा शुभचिंतक

(पं0 अनिल शुक्ल)

न्ययालय कर्मचारियों का पूर्व नेता
पुजारी विश्व शांति भारत
पत्रकार, कानूनी सलाहकार,
पूर्व राष्ट्रीय संरक्षक अखिल भारतीय अधीनस्थ
न्यायालय कर्मचारी संघ, भारत
एवम पूर्व प्रांतीय मार्ग दर्शक दीवानी
न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश

साथियों,

हमारा संगठन एक हित समूह हैं, जो एक दबाव समूह के रुप में कार्य करता है अर्थात संघ के सभी सदस्यों का हित समान है और हम अपने हितो के लिए दबाव बनाने का कार्य करते हैं। दोस्तों हित समान होने के उपरांत भी हम लोग मे जागरूकता और सक्रियता की कमी है। हम अपने हितों के लिए जागरूक नहीं है और न ही इसके लिए सक्रिय योगदान दे रहे हैं। दोस्तों कार्यकारिणी के एक वर्ष से अधिक का कार्यकाल व्यतीत हो गया है जहां हमें किसी कार्य में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त हुई वही कुछ कार्यों में अनावश्यक विलंब हो रहा है। दोस्तों सफलता और असफलता हमारे हाथ में नही है, हमारे हाथ में सिर्फ प्रयास करना और संघर्ष करना है। संगठन के स्तर पर कई जिलों में काफी समय बाद जिला इकाई का पुनः गठन हुआ जो एक सुखद अहसास है वही इतने समय में किसी भी आमसभा का आयोजन न हो पाना एक खेद का विषय है। दोस्तो ! जब जिले के पदाधिकारी प्रदेश के मंच को साझा करते हैं तो मंच की मर्यादा को समझते हैं। वही जब पूरे प्रदेश से आए कर्मचारी उनके विचारों को सुनते हैं तो उन्हे इनकी क्षमताओं का अंदाजा लग पाता है जिससे उन्हे भविष्य के नेतृत्व का निर्धारण करने में मदद मिलती है। इसके अलावा समस्याओं पर तार्किक व सार्थक विचार हो पाता है । कभी कभी किसी बड़ी समस्या का बड़ा ही आसान हल निकल आता है। इसलिए मेरा मानना है कि संघ की बैठक निर्धारित समय पर होना अतिआवश्यक है। यद्यपि इसका एक मुख्य कारण कोविड महामारी भी रही मगर मुझे लगता है कि हम इस विषय पर कुछ उदासीन भी रहे।

दोस्तों ! आपने अपना नेतृत्व एक निर्धारित समय के लिए चुना है। हो सकता है कि वो कुछ लोग की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पा रहे हो । उनको आलोचना का पूर्ण अधिकार है। मगर आलोचना मर्यादित होनी चाहिए द्वेषपूर्ण न हो कर सकारात्मक होनी चाहिए। मेरा मानना है कि हम सभी लोग एक हैं। हमे गुटो में बंटने के बजाए अपना विरोध या समर्थन मुद्दों पर प्रदान करना चाहिए । दोस्तों ! सकारात्मक आलोचना प्रेरक का कार्य करती हैं व ऊर्जा प्रदान करती हैं। दोस्तों ! हम सभी लोग जो जहां भी है उसे किसी न किसी रूप में अपना सकारात्मक योगदान देना चाहिए । अंत में आप सभी को अपनी एक रचना समर्पित करते हुए अपनी लेखनी को विराम देना चाहूंगा :-

.... ⇒

कदम से कदम मिलाएंगे
हर लक्ष्य को हम पाएंगे
चीरेंगे पर्वत का सीना
सागर से मोती लाएंगे
लक्ष्य कितना भी ऊंचा क्यों ना हो
हम आगे बढ़ते जाएंगे
कदम से कदम मिलाएंगे
हर लक्ष्य को हम पाएंगे

साथ देंगे सदा एक दूसरे का
त्याग और समर्पण दिखाएंगे
संकट में हो कोई साथी
उसकी ढाल बन जाएंगे
कदम से कदम मिलाएंगे
हर लक्ष्य को हम पाएंगे

चुनौती लड़ने की नहीं
चुनौती है संग रहना
संग हैं हम तो
हर जंग जीत जाएंगे
कदम से कदम मिलाएंगे
हर लक्ष्य को हम पाएंगे

चिड़िया भी घोंसला बनाती है
चींटी भी दाना लाती है
प्रभु ने हमें इंसान बनाया
हौसले की ताकत से हमें सजाया
निराशा के अंधेरे में
आशाओं की किरण बन जाएंगे
कदम से कदम मिलाएंगे
हर लक्ष्य को हम पाएंगे ।

जय संघ
जय हिन्द

अभिषेक सिंह
वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

यर्की-ए-कर्मचारी यूनियन

नमस्कार पाठकों ,

आशा है की आप सभी स्वस्थ होंगे ,आज में आपको इस लेख के माध्यम से कर्मचारी यूनियन विशेषकर जो संघ की जनपद शाखाएं है उनके बारे में चर्चा करूँगा। वैसे तो मैं सिर्फ सतही चर्चा करता लेकिन हाल फिलहाल कर्मचारी संघ का बहुत से जनपदों में चुनाव हुआ, इस चुनाव में एक बात तो उभर कर आयी कि बहुत समय बाद हमारी प्रांतीय कार्यकारिणी को युवा शक्ति का साथ मिला है, और प्रांतीय कार्यकारणी व पदाधिकारी भी जनपद शाखा का भरपूर साथ दे रहे हैं, लेकिन बहुत जनपदों में हम युवाओं को वरिष्ठों का सहयोग अपेक्षित कम मिला है, हमारे कुछ वरिष्ठ साथियों को लगता है की नए युवा कर्मचारी संघ में उनका कद कम कर देंगे, जबकि ऐसा नहीं है, मेरा मानना है कि हमारे वरिष्ठ साथियों को युवा शक्ति को मौका देना चाहिए क्योंकि अब बिलकुल सही समय है भविष्य के लिए संघ को तैयार करने का।

बहुत से कर्मचारी यूनियन के नाम से ही दूर भागने लगते है क्यों ? क्योंकि उन्हें लगता है की यूनियन किसी काम की नहीं, देखिये यूनियन का मतलब होता है "एकता" जब तक कर्मचारियों में एकता नहीं रहेगी तब तक संघ सशक्त नहीं होगा, मैं आपको बताना चाहूंगा कि अब समय बदल गया है, अगर 'कर्मचारी संघ' को मजबूत बनाते है तो उनकी समस्याओं का निराकरण करवाने में संघ को आसानी होगी, आज भी हमारे बहुत से जनपद न्यायालयों में भौतिक व मूलभूत सुविधाएँ नहीं है, पीने के लिए स्वच्छ जल की सुविधा नहीं है, कर्मचारी के लिए पृथक प्रसाधन की व्यवस्था नहीं है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा की हमारे जनपद झाँसी में महिला कर्मचारियों के लिए एक भी प्रसाधन कक्ष नहीं है, वो तो जैसे तैसे एक सार्वजानिक पुरुष प्रसाधन कक्ष को उनके लिए कामचलाऊ कर दिया, जबकि माननीय उच्च न्यायालय से इसके सम्बन्ध में एक आदेश भी है कि कर्मचारियों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाये, हम नए लोग आगे आकर जनपद स्तर की समस्याएं दूर करना चाहते है, इसीलिए हम लोग संघ में सक्रिय रहते है, क्योंकि संघ एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से हम अपनी बात रखेंगे तो उस बात पर वजनदारी रहती है, वर्तमान में प्रांतीय संघ नए नए आयाम गढ़ रहा है, हमे भी अपने स्तर से संघ की शाखाओं को मजबूत बनाना होगा, अपने अपने जनपद में ऐसे व्यक्ति को चुने जो आप कर्मचारी के लिए लड़ सके, आपकी बात को मजबूती के साथ रख सके और मुसीबत के समय आपका साथ नहीं छोड़े।

मैं उम्मीद करता हूँ की आपको लेख पसंद आया होगा, अगर आपको उक्त लेख के सम्बन्ध में कोई सुझाव या टिप्पणी हो तो मुझे gautam-rahul999@gmail-com पर ईमेल करियेगा आपके सुझावों का स्वागत है।

जय हिन्द।

राहुल चंद्र गौतम
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, झांसी

कविता

मृदा होना, शुरु होना है

उसमे शुरुता भी है

गुरुत्व भी, गुरुत्वाकर्षण भी

मृत्यु भी, जीवन भी

जड़ता भी है।

चेतना भी, कठोरता भी

मृदुता, उर्वरता, बांझपन भी है

रसमयता भी, नीरसता भी

राग भी, वैराग्य भी

ज्ञान भी विज्ञान भी

इतिहास भी, भूगोल भी

दर्शन भी, प्रदर्शन भी

मृदा की इस अकूत सम्पदा की

व्युत्पत्ति स्थल भी

पवित्र वसुन्धरा ।।

विश्व के समूचे दर्शन ज्ञान

विज्ञान, सृजन, चिंतन साधना

आस्था विश्वास एवं

सम्पूर्ण जीव-जगत के

जीवन की आधार शिला

मात्र यही दिव्य धारा है ।।

मो० रिजवान

(डिप्टी रजिस्ट्रार)

मा० उच्च न्यायालय, लखनऊ

समय अमूल्य है

इच्छायें सुहानी होती हैं,

पर इनसे सुहाना होता है,

इन्हे इनकी यथास्थिति पर छोड़ देना,

उसे समय के आसरे छोड़ देना,

क्योंकि ये वर्तमान से पलायन कर देती हैं,

दूर कर देती हैं,

हमें खुद में बैठी उस सत्ता से,

जो हमे संचालित करती हैं,

स्वयं के बोध भाव से

हमें प्रेरित करती हैं जो विराग सहित

अपने जीवन यापन के लिए सार्थक कर्म की ओर ।

इच्छाएँ निर्धारित हैं,

किसी न किसी रुप में फलीभूत हो जाना

इनका ध्येय है ।

बेहद प्यासी होती हैं ये,

भावनाओं का सैलाब ढूँढ़ती हैं

अपनी प्यास बुझाकर,

हमारे व्यक्तित्व को प्यासा बना देती हैं,

हम खुद में अधूरे से प्रतीत होते हैं,

भीतर की कचोट शोर मचाती हैं।

पूर्णता में सुख, अधूरेपन में दुख का

आभास होता है।

समय व्यर्थ होने लगता है,

अनावश्यक दुविधा में

अपनी सत्ता से दूर जाते हैं हम।

जो है समक्ष, उसको भूल जाते हैं,

भ्रम समझते जाते हैं,

व्यथा मिटाने का भरोसा दिलाते हैं,

और उलझ जाते हैं,

बड़े भाग्य से मिले जीवन के इन पलों को

हम यूँ ही गँवाते हैं,

एक रास्ता के कारण, हम विलग हो जाते हैं,

अपने परम स्नेही का हृदय दुखाते हैं,

सत्य सामने है कि हमारा समय अमूल्य है,

हम कैसे इसे बिताते हैं ?

प्रभात शुक्ल
(असिस्टेंट रजिस्ट्रार)
मा० उच्च न्यायालय, लखनऊ

'आज भी उलझी पहेली निर्धनों की बेटियां..'

बाँझ खुशिया हो गयी, गोद सूनी हो गयी ओर

सांझ दुखिया हो गयी।।

पालने से ले जवानी, तक अभावों में पली ।

फिर पिया के देश भी जाकर गरीबी ही मिली ।।

टूटती ढहती हवेली, निर्धनों की बेटियां

'आज भी उलझी पहेली निर्धनों की बेटियां..'

एक बर्तन मांझती तो, एक जल भरती रही-

या किसी बदनाम बस्ती में बसर करती रही-

रात दिन ये मनचलों की, सह रही है फब्तियां-

देश के वातावरण की उड़ रही धज्जियां-

है अमीरों की ठिठोली निर्धनों की बेटियां-

'आज भी उलझी पहेली निर्धनों की बेटियां..'

खेत भर भी बेचकर क्या, माँग पूरी कर सका

पेट उस दानव दहेजी का ना अब तक भर सका

हो विवश लाचार बाबुल बस दुआ देता रहा

आंख से ढलते हुए हुए , हर अर्श्पन्नु ने कहा

बिन लकीरों किं हथेली निर्धनों की बेटिया

'आज भी उलझी पहेली निर्धनों की बेटियां....'

मुनेन्द्र सिंह

(समीक्षा अधिकारी)

मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

नारी तुम रुकना नहीं

अभी तो चलना शुरू किया है,
अभी तो उड़ना शुरू किया है,
इतनी जल्दी तुम थकना नहीं,
हे नारी तुम रुकना नहीं।

उठो इस जग को अभी सोने दो ,
सुंदर सपनों में खोने दो,
तुम्हें स्वयं अपने सपनों को रचना होगा,
इस समाज के कुकृत्यो से बचना होगा,
करना होगा संघर्ष भी ,
कभी होगा दुख तो कभी हर्ष भी,
इतनी जल्दी तुम थकना नहीं,
हे नारी तुम रुकना नहीं।।

लिखने हैं कई नए इतिहास,
स्वयं पर रखो अडिग विश्वास ,
डगर है पथरीली,
न संगी ना सहेली,
रूढ़िवादियों के मत को है बदलना,
करनी है नित नई रचना ,
खुद का अस्तित्व स्वयं है बुनना,
इसलिए तुम थकना नहीं ,
हे नारी तुम रुकना नहीं।।

समुद्र की गहराई से लेकर,
आकाश की ऊंचाई तक,
कन्याकुमारी से लेकर ,
हिमालय की चोटी तक ,
अपना परचम लहराना है ,
समाज को बतलाना है,
कि तुम कोई अबला नहीं,
अपने चीर स्वप्ना से जागो,
अपनी शक्ति को पहचानो,
उठो अभी तुम थकना नहीं ,
हे नारी तुम रुकना नहीं।

तुम पुरुष नहीं ,
परंतु उससे कम भी नहीं ,
तुम्हें स्वयं पर घमंड नहीं ,
पर नारी होने का गम भी नहीं ,
तुम ही प्रकृति हो,
तुम ही हो जननी,
तुम ही अन्नपूर्णा हो ,
तुम ही हो लक्ष्मी,
वक्त पड़े तो तुम चंडी हो,
तुम ही हो दुर्गा,
तुम अंतरिक्ष की कल्पना हो,
तुम संसद की हो प्रतिभा भी ,
नित रचना है इतिहास नए,
सोने के दिन अब गए,
इसलिए अभी तुम थकना नहीं
है नारी तुम रुकना नहीं।।

स्नेहलता सिंह
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, उन्नाव
सम्बद्धः मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद

काश!

कौन हो तुम
कौन है तुम्हारे हम
काश ! समझ पाते, तो बात कुछ और थी।
तुम्हें सदा ही पाया
अपनी सांसों मे, मन में,
मेरी आंखों में देख लेते,तो बात कुछ और थी।
जब भी हम तुम्हें सोचा किये
सनसनी जैसे होती, तन में,
काश ! हमें छू लेते , तो बात कुछ और थी।
लोग जो कहते हैं
दीवाना है तेरा
गर तुम भी कह देते, तो बात कुछ और थी।
शून्य सा मन चूर है
और- मुट्ठी से रेत सा
समय बीतता जाता है
तेरी प्रतीक्षा में,
बस तुम आ जाते, तो बात कुछ और थी।

(सुधीर कुमार विश्नोई)
41/161 न्यायालय परिसर
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

दुनिया की हकीकत

कोई दीवाना कहता है कोई मस्ताना कहता है
कोई पागल मुझे कहता कोई नादान कहता है।
यह दुनिया इक दिखावा है न इसमें डूब जाओ तुम
कोई कश्ती इसे कहता कोई कहता ठिकाना है।
कोई मस्ती है करता तो, कोई दिल थाम बैठा है
कोई हंसता है गाता है कोई रो भी ना पाता है।
कोई महलों में बैठा है कोई सड़कों पर बैठा है
किसी की ताजपोशी है कोई रोता बिलखता है।
अभी से जान जाओ तुम, न इसमें डूब जाओ तुम
जहां से आए हो तुमको वही फिर लौट जाना है।
यही वह जगह है, जिसमें हर इक शय परेशां है
वही फिर चैन मिलना है वहीं अपना ठिकाना है।
हकीकत कुछ भी हो, लेकिन 'हकीक' महसूस होता है
खुदा सब की खबर लेगा हमें तो सब्र करना है।

(मो0 हक़ीक जलाल)
संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ0प्र0
शाखा–लखीमपुर

निकट न गर तुम आई होती
पीर मेरी अनगाई होती

मेरी पीडा के आंगन में
गीतों ने आकार लिया है
तेरी बांहों का अवलंबन
मैने भी साभार लिया है

पाटल की सुषमा अधरो पर
कभी न तेरे छाई होती

तेरी चितवन की वीथी में
गीत कहानी बुनते होते
हम भी तेरे रूप राशि की
चर्चा घर घर सुनते होते

बचपन की चर्चा होने पर
झूम उठी तरुणाई होती

तन में चंपाकली फूटती
मन मे फागुन आया होता
सावन की सुषमा सा तेरा
पोर पोर बौराया होता

सजा सुना देती यदि तुम तो
कहीं नहीं सुनवाई होती

मेहदी लगे हुए हाथों की
सुषमा तेरी न्यारी होती
नील झील से नयन तुम्हारे
तुम केशर की क्यारी होती

तुम्हे देख कवि के मानस में
गूज उठी चौपाई होती

-वियोगी

(सर्वदेव चौबे)
मुंसारिम
जिला एवं सत्र न्यायालय,
वाराणसी

(1)

लगा कर गले तुझे हमने,
भुला दी तमाम दुनिया दारी
तुमसे हजार शिकवे थे हमें
मिटा दी अपनी शिकायतें सारी
यूं तो मेरे सबसे करीब तुम हो
चैन-ओ-सुकून के सबब तुम्हीं हो
तुम्हें सीने से लगा कर ये जाना हमने
मेरी वफाओं का सबब तुम्हीं हो।

वक्त के थपेड़ों से
जो बल पड़ा है पेशानी पर,
मयस्सर हो इश्क़ तेरा,
तभी दर्द - ए- सर जाएगा।
तेरी मोहब्बत में ये 'काफिर' किधर जाएगा,
आगोश में तेरे संवर जाएगा,
या 'फिराक़' में मर जाएगा।।

(2)

पन्नों में दुनिया सिमटी हुई है मेरी
किताबी जिल्दों में बांधा है तेरी यादों को

मेरे लफ्जों में उभर आया है तेरा अक्स
किताबी दुनिया में चूमता हूं तेरे हाथों को

इस फरेबी हकीकत से दूर बहुत दूर
उन ख्यालों की दुनिया में तुम मेरी हो

मोहब्बत के कायदे जहां सिर्फ वफा है
उन किताबों की दुनिया में तुम मेरी हो

(उमेश चन्द्र जायसवाल 'काफिर')
संगठन सचिव
उ0प्र0 दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, बस्ती

''हे नारी''

हे नारी तू क्यों रोती है...
क्यों पर्दो में तू छिपती है...
क्यों दीमक रूपी रीति रिवाजों से
खुद को खोखला करती है..
क्यों तू समाज की बेड़ियों में
खुद को जकड़े रहती है...
क्यों तू हौसलों की पुकार को
खुद में दबाये चुप रहती है...
क्यों तू तमासगीर बन कर
मरती ख्वाहिशों को देखा करती है

तू सीता सी पवित्र है
फिर क्यों अग्नि परीक्षा देती है...
तू मीरा सी पुजारिन है
फिर क्यों विष पान करती है...
तू महिषासुरमर्दिनी सी बलशाली है
फिर क्यों नहीं अस्त्र धारण करती है...
तू काली सी विंध्विनाशिनी है
फिर क्यों अत्याचार सहती है..
तू गंगा सी अडिग है...
फिर क्यों पत्थरों से डरती है...

खुद को जला कर मत जला कर...
तू आग है
ज्वाला सी जला कर..
जो पिघला दे पत्थरो को भी
उस लावा सी बहा कर...
तू रोशनी है
जो चीर दे अंधेरों को भी
उस मशाल सी जला कर..

तू सैलाब हैं
लहरों का दामन थाम ले
सीमाओं को लांघ कर,
अब हर बंधन को तोड़ दे...
कायरता त्याग, शोर मचा..
रूह कांपने लगे उसकी
ऐसी बुलंद आवाज उठा..
शांति स्वरूप भूल कर
क्रांति को हथियार बना

तू सन्नाटो में भी
अन्तरमन की आवाज पहचान..
है जिन्दा तू भी,
ये अहसास जगा...
कतरे हुए पंखो को समेट
तू आगाज कर....
तू पक्षी है
उड़ान भर...
धरातल पर या फिर अंबर पर
कर कुछ भी बस आगाज कर....
डगमगा कर रुक मत
कदम बढ़ा...
कर कुछ भी बस अपनी पहचान बना....

जूही सक्सेना
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बाराबंकी

"अग्निवीर"

अग्निवीर क्या हैं कुछ समझो, दंगे न उत्पात करो,
गैरों की बातों में आकर, जीवन ना बर्बाद करो ।
पूछो अगर तुम्हें ना आता, असली है या फर्जी है ।
नहीं पसन्द तुम्हे अगर योजना,
तो न जाओ क्या जबरदस्ती है ।
आज सभी को बहुत जरुरत,
रोजी रोटी पाने की ।
दीन धरम ईमान आदि से,
पैंसा बहुत कमाने की ।
बेरोजगारी बहुत यहां है,
जाने वाले जायेंगे ।
करते रहे विरोध यहां जो,
वो पीछे पछतायेंगे ।
सेना में जाकर के सेवा,
देना पुण्य महान अहा,
देश के खातिर जीना-मरना,
किस्मत का उपहार महा ।
चार साल में लाखों रुपये,
अवसर मिला कमाने का ।
अगर मेहनत रंग जो लाई,
तो फौज में उम्र बिताने का (25%)
जिसके हों मजबूत इरादे,
वो ही अव्वल आते हैं ।
मेहनत जो करना ना चाहे,
वो पीछे रह जाते हैं ।
नौजवान अब जाग उठो,

मौका मिला है तुम यूं गंवाओ ना ।
अगर देश से प्रेम तुम्हें है,
अग्निवीर बन जाओ ना ।
अपने पैरों मार कुल्हाड़ी,
दंगे क्यों भडकाते हो ।
किसके एक इशारे पर,
ट्रेनों में आग लगाते हो ।
सरकारी सम्पत्ति को क्यों तुम,
घाटे में पहुंचाते हो ।
शोर शराबा मचा मचाकर,
ऐसे वीर नहीं बनते ।
असली सेवा जिसको करनी,
``अग्निवीर'' वही बनते ।।

(लवकुश सरोज)
आशुलिपिक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बहराईच

``सुख–दुःख''

सुख दुःख में अंतर नहीं
बड़ा सूक्ष्म है सार,
है सुख, जो स्वीकार लो
वरना दुःख अपार,

वरना दुःख अपार
समय संग बहना होगा,
सुख दुःख मान, समान
सभी कुछ सहना होगा,

सभी कुछ सहना होगा
जीवन की सच्चाई,
रत होकर, रहें विरक्त
इसी में है अच्छाई,

इसी में है अच्छाई
न रहे किसी से बैर,
सुख दुःख सच्चे मीत
नहीं, कहीं कोई गैर,

नहीं, कहीं कोई गैर,
सुख आये, दुःख जाए,
दुःख है, सच्चा मीत
जो जीवन को समझाए,

जो जीवन को समझाए
ले अपनो को पहचान,
भले बुरे में अंतर करदे
देकर सच्चा ज्ञान ।

राजेश बंसल
(वरिष्ठ सहायक)
जिला एवं सत्र न्यायालय, मथुरा

मुस्कुराने की तलब

तलब हो रही है अब मुस्कुराने की,
कभी खुद को गुदगुदाता हूँ,
तो कभी लतीफा सुनाता हूँ,
कभी आईने में शक्ल अपनी देखकर,
चेहरे बेतुके बनाता हूँ,
कहीं जरूरत न पड़ जाए मुझे पागल खाने की,
तलब हो रही है अब मुस्कुराने की।
वो महफिलें याद आती हैं,
जिनसे कभी मैं जी चुराता था,
वो लोग याद आते हैं,
जिनसे अपना गहरा नाता था,
सब हो जाएगा पहले जैसा,
जरूरत नहीं है घबराने की,
तलब हो रही है अब मुस्कुराने की।
वक्त का स्वाद थोड़ा तीखा है,
लहरों के विपरीत तैरना अभी अभी सीखा है,
कैफियत समझो अभी फिजाओं की,
जरूरत नहीं है अभी तिलमिलाने की,
तलब हो रही है अब मुस्कुराने की।

साकेत सिंह प्रजापति
(न्यायिक सहायक)
जनपद न्यायालय ,बहराइच।।

"वक्त नही है"

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हंसी के लिए वक्त नही है।
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं है।
सारे रिश्तों को तो हम मार चुकें है,
अब उन्हें दफनाने का वक्त नहीं है।
सारे नाम मोबाइल में है,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं है।
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं है।
आँखों में है नींद भरी,
पर सोने का वक्त नहीं है।
दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने का वक्त नहीं है।।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने का भी वक्त नहीं है।
पराये एहसानों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं है।
तू ही बता ऐ जिन्दगी,
इस जिन्दगी का क्या होगा।
कि हर पल मरनें वालों को जीने के लिए
भी वक्त नहीं है।

भानु प्रताप सिंह
'पुष्कर'
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय इटावा

(1)

पथिक हूँ अनन्त का, अनन्त मेरा वास है
विचर रहा जगत में, ये तो बस प्रवास है
पथिक हूँ अनन्त का
बिछड़ कर अनन्त से,अनन्त की तरफ चला
भ्रमित हुआ इस कदर,रास्ता अब भी न मिला
जीवन के भंवर सिन्धु में,लहर कभी तो आयेगी
तिमिर भरी राहों में,डगर प्रकाश की दिखाएगी
इस अर्थहीन जीवन की,यही तो एक आस है
विचर रहा जगत में, ये तो बस प्रवास है
पथिक हूँ अनन्त का
होकर सवार व्यथित जीव, स्वयं के अभिमान पर
अधिमान देता स्वयं को,दूसरों के मान पर
न कुछ होते हुए भी, स्वयं को सिद्ध करता हुआ
मन की पावन धरती को,व्यर्थ दूषित करता हुआ
क्या कुछ पाने को मचलता, हृदय में रखता प्यास है
विचर रहा जगत में, ये तो बस प्रवास है
पथिक हूँ अनन्त का
भटकते हुए दर बदर, कितने युग गुजर गए
रास्ते की तलाश में, मेरे शाम ओ सहर गए
भव सिन्धु के किनारे भी,एक दिन मिल जायेंगे
बिछड़े हैं अनन्त से,अनन्त में मिल जायेंगे
यात्रा हो जायेगी पूरी,ऐसा अटल विश्वास है
विचर रहा जगत में, ये तो बस प्रवास है
पथिक हूं अनन्त का,अनन्त मेरा वास है
विचर रहा जगत में, ये तो बस प्रवास है

(2)

अजीब सी लगती है सहर, इक्कसवीं सदी है
बदले हुए हैं सारे मंजर, इक्कसवीं सदी है।
महकते थे गुलशन जो, गुलों की खुशबू से
नजर आते हैं वो बंजर, इक्कीसवीं सदी है।
होते थे आशियाने कभी, परिंदों के जिस पर
तन्हा है वो उजड़ा शजर, इक्कीसवीं सदी है।
नस्ल मशगूल है जीने में, जिन्दगी अपने तरीके से
रवायतों से वो हैं बेखबर, इक्कीसवीं सदी है।
जाती रही महक फ़िजाओं की, कि दम घुटता है
घुल गया हवाओं में जहर, इक्कीसवीं सदी है।
जिंदगी निसार दी कितनों ने, महज एहसास की खातिर
आहें दिल की हुईं बेअसर, इक्कीसवीं सदी है।
मार के ठोकर चलते जाना, हिस्सा हुआ जिन्दगी का
कैसी चली जमाने में लहर, इक्कीसवीं सदी है।
आलम बेजारियों का क्यों है, हर किसी दिल में
दुश्वार हुई बहुत रहगुजर, इक्कीसवीं सदी है।
आदमी की आदमी के लिए, हिकारत के माहौल में
उम्र किस कदर होगी बसर, इक्कीसवीं सदी है।
न हमजुबां न हमसफर, न हमदर्द है कोई
अब मौत हो जाए मुंतजर, इक्कीसवीं सदी है।

(योगेश कुमार शर्मा)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मथुरा

इश्क उधार

मेरा इश्क तुझपे उधार है
कभी आके मेरा हिसाब कर
तू दे मुझे रातें मेरी
वो प्यार की बातें मेरी
मेरा चैन दे, सुकून दे
मेरे इश्क का तू जुनून दे
तू लौटा मुझे चाहत मेरी
नींदें मेरी, राहत मेरी
शिकवा मेरा शिकायत मेरी
गिरजा मेरा, इबादत मेरी
मुझे सब्र दे, करार दे
मेरे मौसमों की बहार दे
मेरी जिन्दगी के साल दे
मेरा हल तो दे मेरा हाल दे
लौटा मुझे मेरा पता
मेरी गल्तियां, मेरी खता
मेरा दिल तो दे कि धड़क सकूँ
मेरी रूह दे जो भटक सकूँ
मुझे जिन्दगी की वजह तो दे
मेरी सांसों को कुछ जगह तो दे
रातों के सब वो तारे दे
ख्वाब मुझे वो सारे दे
तू सौंप दे जवानी मेरी
गजलें मेरी कहानी मेरी
मुझको मेरी पहचान तो दे
नाम न दे बदनाम तो दे

मुझको मेरा शहर सौंप तू
मेरी गजलों की बहर सौंप तू
तू दे मेरी नादानियां
मेरी शोखियां, शैतनियां
रुसवाईयां, कठिनाइयाँ
ऊँचाइयाँ, गहराइयां
मुझको मेरा सलाम दे
मेरे शौक दे, कलाम दे
लौटा मुझे शोहरत मेरी
नफरत मेरी, वहशत मेरी
वो गीली निगाहें सौंप भी दे
मेरी सूनी बांहें सौंप भी दे
अब दे भी दे वो खयाल भी
वो जवाब भी वो सवाल भी
चल दे मुझे सेहरा मेरा
साया मेरा, चेहरा मेरा
मेरा वजूद मुझको सौंप तू
तब मुझको फिर खंजर घौंप तू
मेरा इश्क तुझपे उधार है
कभी आके मेरा हिसाब कर ।

(अमित मिश्र 'केवल')
जिला एवं सत्र न्यायालय, लखनऊ

जीवन नि: शब्द है !

किसी की याद की तरह
जल के वाष्पन की तरह
फूल के खिलने की तरह
मां की गोद में सोने की तरह
दूब पर ओस की बूंद जैसे
गगन में उड़ते पक्षी की तरह
वन में नाचते मयूर की तरह
मुहब्बत में सुरूर की तरह

जीवन निशब्द है!
इसे लफ्जों में बाधूं कैसे?
ये तो महसूसियत है-
हल्की-सी मद्धम समीर की तरह
आंगन में रिमझिम नीर की तरह
ये उल्लास का चमन है
ये शिव-शिवा मिलन है
ये आनन्द का आगार है
ये सौंदर्य का असीम द्वार है
ये शून्य है ध्यान की परिसीमा है
ये प्राणों का शाश्वत गुंजन है

जीवन निशब्द है!
ये पवित्र है कौमार्य की तरह
ये स्वच्छ है इंद्रधनुष की तरह
ईश्वर का अस्तित्व है जीवन
आत्मिक समर्पण है जीवन
बल और बुद्धि से परे है जीवन
इसे जिया जा सकता है जाना नहीं
स्वयं से स्वयं को प्रणाम है जीवन
शाश्वत शिव का प्रमाण है जीवन

जीवन निशब्द है!
राधा कृष्ण के
चांदनी रात में मिलन की तरह
विरह में किसी के आंसुओं के तरह
सिया के राम की प्रतीक्षा की तरह
अंधेरे में जलते एक दिए की तरह
सादेपन में रंगोली की तरह
अपनों से मिलन में होली की तरह
जीवन निशब्द है!

इन्द्रेश कुमार
लिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

जिन्दगी बड़ी तंग है...

जिन्दगी बड़ी तंग है...

क्या करें, न कोई उमंग है।

उम्मीदों के बादल मौन है।

ये हमसे खेल कर रहा कौन है।

मुश्किलें ऐसे लिपटी हुई,

जैसे चन्दन से लिपटी हुई भुजंग है।

जिन्दगी बड़ी तंग है...

जिन्दगी बड़ी तंग है...

क्या करें, न कोई उमंग है।

सब कोशिशे नाकाम है।

अब ये दर्द तो सुबहो शाम है।

मौत भी आती नही,

जिन्दगी भी जी जाती नही

ऐसी साजिशों में हम फस गयें

न मिलता कोई इसका अंजाम है।

जीने की हसरत को जगा दे...

नही मिलती, ऐसी कोई तरंग है।

जिन्दगी बड़ी तंग है...

जिन्दगी बड़ी तंग है...

क्या करें, न कोई उमंग है।

जिन्दगी बड़ी बे ढंग है।

पढ़ कर ये लाइनें,

मेरे अपने सब दंग है।

कह रहे हुआ क्या 'नीरज' को,

क्या इसने पी ली भंग है।

जिन्दगी बड़ी तगं है...

जिन्दगी बड़ी तंग है...

नीरज मणि त्रिपाठी

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, बस्ती

मेरे ख़्वाबों की मलिका हो तुम,
मेरे दिल की धड़कन हो तुम।
मैं दरिया हूँ गर मोहब्बत का,
तो मोहब्बत का समंदर हो तुम।

मेरी तन्हाई की साथी हो तुम,
मेरे ठहरे बदन की अँगड़ाई हो तुम।
मैं फरिश्ता हूँ गर मोहब्बत का,
तो मेरी मोहब्बत की खुदा हो तुम।

मेरे अरमानों की चाहत हो तुम,
मेरे उच्छल से मन की राहत हो तुम।
मैं तपती जमीं हूँ गर रेत सी
तो शीतल फुहारों की बरसात हो तुम।

मेरी डगर की मंजिल हो तुम,
मेरी कश्ती की साहिल हो तुम ।
मैं पर्वत हूँ गर गुरुर का,
मेरे गुरुर की आदत हो तुम।

मेरे बदन की हरारत हो तुम,
मेरी दुआ की इबादत हो तुम।
मैं पूजता हूँ गर उस खुदा को,
तो उस खुदा की पैमाइश हो तुम।

योगेश कुमार 'योगी'
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बदायूं

तेरी हो ली पिया मेरी होली पिया

अपने आँखों से मैंने, गुजारिश ये कि,
काले काजल को खुद में समेटे रहो,
अपने होठो से भी, मैंने ये कह दिया,
इनकी लाली को यूँ न बिखेरे रहो,
झुल्फों से भी तो मिन्नते बहुत है किया,
फूल गजरे के खुद में लपेटे रहो,
छू न पाए किसी रंग का कतरा कोई,
इन गालो पर बस उनका रंग चाहिये,
छू ले वो इनको आके मोहब्बत से जो,
फिर न कोई भी और इनको रंग चाहिए,
है ये रहमत खुदा की जो तेरी, हो ली पिया,
फिर तो हर दिन मेरी, होली हीं है पिया,
तेरी बाहों में महकूँ गुलालों सा मैं,
तेरी आँखों मे दिखती रंगोली पिया,
रंग भरके जो होठों से तूने छुआ,
मैं तो सतरंगी बनके हूँ, डोली पिया,
रंग अंगों का तेरा, जो मुझ पे चढ़ा,
मैं तो रंगोली बन, तेरी हो ली पिया,
मेरी होली पिया तेरी हो ली पिया,
तेरी हो ली पिया, मेरी होली पिया।।

विवेक कुमार
प्रधान सहायक
जनपद न्यायालय, अमेठी
सम्बद्ध : मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

क्यूँ हैवानियत के वास्ते,
इंसानियत खोता जा रहा आदमी।
तोड़ चैनों अमन के बंधन,
खुद का दुश्मन होता जा रहा आदमी।।
है एक ही सूर्य एक ही चाँद
हैं एक ही नीले अम्बर तले।
है एक ही रहीम एक ही राम,
कण कण में है उसका नाम।
फिर क्यूँ अपने पराये की धार में,
बहता जा रहा आदमी।।
है हम सबका रहनुमा,
एक ही ईश्वर अल्लाह।
है एक ही मजहब उसका,
है एक ही मकसद उसका।
फिर क्यूँ मजहब मकसद की आग में,
जलता जा रहा आदमी।।
क्या भरोसा रूह के लिबास का,
कब ढह जाये कच्चे घरौदें की तरह।
है सबको उस ईश्वर अल्लाह का वास्ता,
मिलके खोजे कोई ऐसा रास्ता।
तोड़ मजहब मकसद का बंधन,
एक ही अम्बर तले लाया जाए आदमी।।

आनन्द कुमार `आदित्य'
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय
जौनपुर

माँ

"मेरा हर एक गम ऐसे चुरा लेती है,
माँ गोद में मुझको सुला लेती है।

चुपके-चुपके रोती तो जरूर है,
पर बच्चों कों देखकर मुस्कुरा लेती है।

इक रोटी हिस्सों में बँटती है जब
वो पानी सें ही भूख मिटा लेती है।

ऐसी सजा भला कौन दे सकता है,
डाँटकर कलेजे से लगा लेती है।

बस दो हाथ है लम्बा उसका आँचल
पर हर एक बला से बचा लेती है।

कुलदीप कृष्ण
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय
कानपुर नगर

‘क्यूं देखते रहते हो गुलाब की तरफ’

पहुंच आए हैं शहर-ए-वीरान की तरफ,
अब फिक्र क्यूं हो अपने नुकसान की तरफ।

अपने ही अजनबी-सा तेवर दिखा रहे हैं,
नजरें कैसे लगाए रखें अपने सामान की तरफ।

रफ्ता-रफ्ता थम जाएगा मेरी धड़कनों का कारवां,
तुम खुद उंगली उठा रहे हो मेरी पहचान की तरफ।

हसरत किसी से कुछ पाने की अब और न रही,
क्यूं उठाएं अपने हाथ अब आसमान की तरफ।

अनपढ़! कह दिया है मुझे अपने जिस्म की खुशबू,
फिर क्यूं देखते रहते हो गुलाब की तरफ।

नितेश कुमार ‘अनपढ़’
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बाराबंकी

वही आंगन, वही खिड़की ,
वही दर याद आता है,
मैं जब भी तन्हा होता हूँ,
मुझे घर याद आता है,
सफलता के सफर में तो
कहाँ फुर्सत कि, कुछ सोचें,
मगर जब चोट लगती है,
मुकद्दर याद आता है,
मई और जून की गर्मी,
बदन से जब टपकती है,
नवम्बर याद आता है,
दिसम्बर याद आता है,

अपनी कर्मभूमि में घर से दूर
जब भी अकेला होता हूं,
मुझे घर याद आता है,
वही दर याद आता है।

सन्तोष कुमार गुप्ता
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, इटावा

प्रयास पर विश्वास

रख विश्वास स्वयं पर बंधु
जीवन प्रति पल उज्ज्वल होगा।

श्रम को इतना सज्जित कर लो
मंजिल को भी लज्जित कर दो
आशाओं को छोड़ बंधु अब
समय के आगे चलना सीखो।
तपा दो खुद को अंगारों में
आज से बेहतर कल होगा।
रख विश्वास स्वयं पर बंधु
जीवन प्रति पल उज्ज्वल होगा।

चाहे जो विपदाएं आए
जीवन त्रस्त - पस्त हो जाए
करो हृदय को पत्थर के सम
अश्रु धार से लड़ना सीखो।
तूफानों को चीर, बढ़ आगे
नाम तेरा ही केवल होगा।
रख विश्वास स्वयं पर बंधु
जीवन प्रति पल उज्ज्वल होगा।

घोर अंधेरों के भंवर जाल से
मन में उठते व्यर्थ सवाल से
देख तिमिर के आर पार तक
सूरज के सम जलना सीखो।
करो परिश्रम अंत श्वांस तक
कभी भी ना मन विह्वल होगा।
रख विश्वास स्वयं पर बंधु
जीवन प्रति पल उज्ज्वल होगा।

पार कर श्रम की पराकाष्ठा
दबा के मन की पीड़ाओं को
आशंकाओं को दूर फेंक कर
अस्तित्व स्वयं बनाना सीखो।
अमिट तुम्हारी प्रतिभाओं से
कलरव सारे नभ थल होगा।
रख विश्वास स्वयं पर बंधु
जीवन प्रति पल उज्ज्वल होगा।

नगेन्द्र कुमार जायसवाल

अध्याय

एक और अध्याय हुआ समाप्त
हम चले एक और अध्याय लिखने
कुछ जबरदस्त गढ़ने...
कुछ जबरदस्त बुनने...
जो बह चला वो बह चला
बहे नीर की धारा का क्या?
जो आज है...जो अभी है
है सत्य वही...वही सही है
भविष्य को और सुवासित होना है
स्वयं को और परिभाषित होना है
फिर है इतना क्लांत क्यों?
विचलित सा अशांत क्यों?
तेरे अंतर में है सारा जग
तेरे साधने से बचा रहे कौन सा मग
यह रैन दिशा अब थोड़ी है
तूने तो मुक्ति की राह जोड़ी है।

(आशुतोष झा)
पूर्व कर्मचारी
जिला एवं सत्र न्यायालय, शामली

नई नई आँखें हों तो हर मंजर अच्छा लगता है
कुछ दिन शहर में घूमे लेकिन अब घर अच्छा लगता है

मिलने-जुलने वालों में तो सब ही अपने जैसे हैं
जिस से अब तक मिले नहीं वो अक्सर अच्छा लगता है

मेरे आँगन में आए या तेरे सर पर चोट लगे
सन्नाटों में बोलने वाला पत्थर अच्छा लगता है

चाहत हो या पूजा सब के अपने अपने साँचे हैं
जो मौत में ढल जाए वो पैकर अच्छा लगता है

हम ने भी सो कर देखा है नए पुराने शहरों में
जैसा भी है अपने घर का बिस्तर अच्छा लगता है

(सौरभ श्रीवास्तव)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, कासगंज
सम्बद्धः मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

'न्याय' मांग रहे 'न्याय' विभाग के कर्मचारी

उत्तर प्रदेश जनपद न्यायालयों में कर्मचारियों की कमी से मुकदमों का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। उत्तर प्रदेश के न्यायालयों में मूलभूत सुविधाओं और कर्मचारियों की बेहद कमी है। इस वजह से फरियादियों को समय पर न्याय मिल पाना संभव नजर नहीं आ रहा। हालात ऐसे हैं कि मुकदमों की संख्या लगातार बढ़ने की वजह से आम आदमी परेशान हो रहा और न्याय विभाग पर काम का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है, उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों के प्रांतीय संघ, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ एवं चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश द्वारा अधीनस्थ न्यायालयों में कार्यरत कर्मचारियों को मूलभूत सुविधाएं दिलवाए जाने हेतु माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद एवं उत्तर प्रदेश शासन को पत्राचार करना आरंभ कर दिया है।

अधिकांश जनपद न्यायालयों मे जरूरी सुविधाओं के लिहाज से प्रदेश सरकार द्वारा बजट आवंटित नहीं होने से प्रदेश के अधिकतर न्यायालयों में शुद्ध पेय जल, स्वच्छता और शौचालय से लेकर अन्य सुविधाओं का अभाव है, जिस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। इतना ही नहीं कर्मचारियों की कमी के चलते न्यायालयों पर मुकदमों का बोझ बढ़ रहा। फिर भी कर्मचारियों की भर्ती नहीं की जा रही है। लिहाजा, कार्यरत कर्मचारियों पर लगातार वर्क लोड बढ़ रहा है। तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की कमी होने के करना अधीनस्थ न्यायालयों के न्यायिक कर्मचारियों को सुबह साढ़े 9 से रात 9, 10 बजे तक काम करना पड़ता है। कर्मचारियों के वेतन विसंगति को लेकर आज तक शासन की ओर से कोई कदम नहीं उठाए गए। इसलिए उत्तर प्रदेश एक अधीनस्थ न्यायालयों के कर्मचारियों में हीनभावना उत्पन्न होने लगी है वर्ष 2003 में देश के सबसे बड़े एवम् सम्माननीय प्रतिष्ठान माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शेट्टी कमीशन के हिसाब से वेतन एवं अन्य मूलभूत सुविधाएं लागू किए जाने का आदेश पारित किया गया था परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आज तक उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में कार्यरत कर्मचारियों हेतु माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा पारित आदेश के अनुपालन में कोई भी शासनादेश या कोई भी आदेश पारित नहीं किया गया है।

इसीलिए यह सुनने में थोड़ा अजीब जरूर लगेगा कि न्याय विभाग अब खुद न्याय मांग रहा है, लेकिन अपने अधिकार और हक की आवाज उठाना लोकतांत्रिक व्यवस्था में आता है। दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ एवम् चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के माननीय अध्यक्ष, महामंत्री एवम् उपमहासचिव द्वारा संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए माननीय उच्च न्यायालय

इलाहाबाद पत्राचार करना आरंभ कर दिया है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में कार्यरत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भी बहुत दुर्दशा है चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को बहुत ही उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से बहुत अन-ऑफिशियल कार्य कराए जाते है, जिससे अधीनस्थ न्यायालयों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों द्वारा अपने पद से त्यागपत्र दिया जा रहा है चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में कार्य करने को तैयार नहीं हो रहे है।

चिकित्सा क्षतिपूर्ति दावा

उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में जब कोई कर्मचारी चिकित्सीय अवकाश पर जाता है वह स्वयं बीमार हो या कर्मचारी के परिवार का कोई सदस्य जो कर्मचारी पर निर्भर हो बीमारी का इलाज कराकर जब भी वापस आकर कार्यालय उपस्थित होता है तो वह अपना सभी चिकित्सीय प्रपत्र दाखिल करता है। चिकित्सीय प्रपत्र दाखिल होने के उपरांत वह मुख्य चिकित्सा अधिकारी के यहां प्रतिहस्ताक्षरित होने हेतु भेज दिया जाता है मुख्य चिकित्सा अधिकारी के यहां से जब वह धनराशि प्रतिहस्तक्षारित होकर न्यायालयध्कार्यालय आ जाती है तो यहां एक क्षतिपूर्ति दावा कमेटी बना दी जाती है फिर वह क्षतिपूर्ति दावा एक साल, दो साल तीन साल तक कमेटी मे ही पड़ा रहता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि सभी अल्पवेतन भोगी कर्मचारी है, कर्ज लेकर लोन लेकर या अपनी जमीन बेचकर लोग इलाज कराते हैं और इलाज कराने में जो भी पैसा खर्च होता है वह खर्च राज्य सरकार द्वारा नियमानुसार प्रदान किया जाता है। परन्तु यहां चिकित्सीय क्षतिपूर्ति दावा की धनराशि जो की मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित करने के उपरांत दो दो साल बाद रिलीज किया जाता है, जो त्वरित प्रदान किया जाना चाहिए जिससे मनुष्य जीवन की रक्षा की जा सके परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यहां दो दो साल का समय लग जाता है जो अनावश्यक समय बर्बाद किया जाता है।

(विनय कुमार शुक्ला)

प्रांतीय उपमहासचिव

चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश

'यूँ मुश्किलों से तू न डर'

यूँ मुश्किलों से तू न डर,
प्रयत्न कर प्रयत्न कर

तू कदमो को न रुकने दे,
स्वयं को तू न थकने दे

प्रयत्न करके हारा जो,
तो शिकस्त भी एक शस्त्र है,

एक पग भी न बढ़ाया जो ,
तो ये जिंदगी शिकस्त है

अड़चनों की धूप में,
तू कोशिशो की छाव बन

यूँ मुश्किलों से तू न डर,
प्रयत्न कर प्रयत्न कर..

आरंभ गर न बन सके,
स्वयं का तू विहान बन

तू भाग्य को न दोष दे ,
स्वयं का तू विधान बन

यूँ दूसरो की जीत से,
स्वयं को तू न कम समझ

स्वयं को तू ये सिद्ध कर,
तू लक्ष्य से क्यूँ दूर है

यूँ मुश्किलों से तू न डर,
प्रयत्न कर प्रयत्न कर..

ना रौशनी की राह तक,
स्वयं की तू मशाल बन

अब ध्येय के इस युद्ध में,
स्वयं की ही तू ढाल बन

तू सूर्य गर ना पा सके,
स्वयं का आसमान बन

तू धैर्य की उड़ान भर,
तू सब्र रख तू सब्र रख

यूँ मुश्किलों से तू न डर,
प्रयत्न कर प्रयत्न कर..

कोशिशो की राह पे,
स्वयं को तू भटकने दे

तू मंजिलो को पाएगा ,
कदम न डगमगाने दे

तू हौसलों की सीप में,
बुलंदियों की मोती बन

यूँ मुश्किलों से तू न डर,
प्रयत्न कर प्रयत्न कर..

ऋषि यादव
अध्यक्ष : दीवानी न्यायालय कर्मचरी संघ,
उत्तर प्रदेश शाखा-फर्रुखाबाद

अपना घर

"मीरा! कहाँ गई ये छोरी", कमला अपनी ग्यारह साल की बेटी को पुकार रहीं थी। कमला ने अलमारी के पीछे छिपी मीरा के कान पकड़ते हुए कहा, "अभी तेरे बाबा आने वाले है। अब खेलना बंद कर और जल्दी से रसोई में चलकर मेरी मदद कर वर्ना तेरे बाबा के गुस्से से तेरा बच पाना नामुमकिन हो जाएगा।" तभी दरवाजे पर किसी की आहट हुई। आहट सुनते ही दोनों माँ और बेटी रसोई की तरफ भागते हुए चली गयी। मीरा के बाबा सुरेश मजदूर थे और मीरा की माँ पास की कालोनी में लोगों के घरों में झाड़ू-पोछा करती थी। रात हो चुकी थी, अब सब खाने की तैयारी में लगे थे। सुरेश खाना खाने बैठे थे और मीरा रसोई में साफ़ सफाई में लगी थी। मीरा की माँ सुरेश को खाना परोस रहीं थी। सुरेश ने जैसे ही एक टुकड़ा मुँह में डाला तो गुस्से से लाल हो गया। कमला को डांटते हुए बोला, " नमक कितना कम है सब्जी में, कितनी बार कहा है कि इस छोकरी को भी अच्छा खाना बनाना सीखा दे वर्ना ससुराल जाकर मेरी नाक कटवा देगी ये।" सुरेश बोलता जा रहा था और मीरा रसोई से सब सुन रही थी। उसके लिए ये कोई नई बात नहीं थी, ये तो रोज का ड्रामा है। बाबा तो उसे किसी ना किसी बात को लेकर सुनाते ही रहते है और फिर हर बार बात वहीं ससुराल पर जाकर अटक जाती है। कमला सुरेश को समझाते हुए बोली, "अरे! बच्ची है वो अभी, सीख जायेगी धीरे-धीरे। अभी तो उसकी शादी में समय है और वो तो कह रही थी कि माँ मैं पढ़-लिख कर खूब पैसे कमाकर आप दोनों की सेवा करुँगी।" सुरेश कमला की बात काटते हुए बोला, "बस तुम्हारी इन्हीं बेकार की बातों ने तो उसे बिगाड़ दिया है। बच्ची नहीं है वो अब, पूरे ग्यारह बरस की हो गयी है। इस उम्र में तो तुम ब्याह के मेरे घर आ चुकी थी" सुरेश ने अपनी बात जारी रखी, "और ये क्या बकवास लगा रखी है कि पढ़ूंगी, पैसे कमाकर सेवा करूँगी। तू भूल मत बिटिया जात है, बिटिया के पैसे से खाएंगे तो सब थूकेंगे हम पर। ब्याह करके अपने घर चली जायेगी ये तो। इसकी पढ़ाई में इतना पैसा लगाने का क्या फ़ायदा। लड़का जना होता तूने तो बात भी थी, पर हाय रे मेरी फूटी किस्मत! एक तो एक ही बच्चा दिया भगवान ने और वो भी छोरी। जब तक सरकार मुफ्त में पढ़ा रही है तब तक पढ़ ले बस। आखिर में करना तो यही चौका बर्तन ही है, कौन-सा कलेक्टर बन जायेगी चार अक्षर पढ़कर।"

समय बीतता गया और आखिर मीरा के अपने घर में जाने के दिन आ ही गए। मीरा के दूर के चाचा उसके लिए रिश्ता लेकर आए। लड़का उनके साथी ही पास के शहर में आटो चलाता था। मीरे के घर वालों को बात जंच गयी और उन्होंने बिना समय गवाएं मीरा की शादी कर दी। विदाई के समय हर माँ की तरह मीरा की माँ ने भी उसे ससुराल में सबका

ख्याल रखने की हिदायत दी और साथ ही ससुराल के मान-सम्मान की रक्षा करना उसका परम कर्तव्य बताया। मीरा सब कुछ बड़े ध्यान से सुनकर आत्मसात कर रही थी। आठ बरस बीत गए। अब मीरा दो प्यारी बच्चियों की माँ बन चुकी थी। बड़ी बेटी तीन बरस की और छोटी बेटी दो बरस की हो गई थी। मीरा की सास जब तब उसे बेटा पैदा ना कर पाने के लिए कोसती रहती। मीरा का पति भी अपनी माँ का ही पक्ष लेता। और अब तो हद ही हो गई थी, मीरा का पति आए दिन शराब पीकर उसे पीटता था। फिर भी वो सबकुछ सहन करती रही, अपनी बच्चियों की खातिर और शादी के समय माँ के द्वारा दी गयी उस हिदायत की खातिर जिसमें उसकी माँ ने कहा था कि बिटिया अब तेरा ससुराल ही तेरा घर है, तेरा अब उस घर से जन्म-जन्म का नाता जुड़ गया है।

एक रात मीरा पानी लेने के लिए उठी तो उसने अपनी सास और पति को बात करते सुना। मीरा की सास मीरा के पति से दोनों बच्चियों को रास्ते से हटवाने की बात कर रहीं थीं ताकि उनके घर से मनहूस छाया हटे और उनको भी पोते का मुँह देखने का अवसर मिले। मीरा स्तब्ध होकर सब चुपके से सुन रही थी। मीरा की सास ने बात जारी रखी," अगर बाबा जी का बताया ये उपाय काम नहीं किया तो फिर हम तुम्हारी दूसरी शादी कर देंगे। और मीरा का क्या है, पड़ी रहेगी एक कोने में, कम से कम घर का कुछ काम ही कर दिया करेगी।" ये सब सुनकर मीरा की आँखों से आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे, पोते की चाह में उसकी सास इतना नीचे गिर जायेंगी, ये उसने कभी ना सोचा था। और उसके पति ने भी इस कुकृत्य में बराबर का भागीदार बनने की पूरी तैयारी कर ली थी। अपने आँसुओं को साड़ी के पल्लू से पोछते हुए मीरा ने आसमान की तरफ देखा। सूर्योदय होने को था, सूर्य की लालिमा आकाश को सुनहरा बना रही थी। सूर्योदय उसे नए दिन की शुरुआत का संकेत दे रहा था। मीरा चुपचाप अपने कमरे में गई। गठरी में उसने थोड़ा सामान रखा। उसकी बड़ी बेटी अब तक उठ चुकी थी। मीरा ने गठरी कंधे पर रखी, अपनी छोटी बेटी को गोद में लिया और बड़ी बेटी का हाथ पकड़कर घर से बाहर की ओर चल दी, अपने घर की तलाश में.........

(निशा तिवारी)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, कानपुर नगर

सम्माननीय अध्यक्ष/महासचिव महोदय एवम सभी साथी बंधुओं,

बहुत ही लंबे समय से हम लोग और हमारे बड़े भाई लोग जो न्यायपालिका में कार्यरत रहे हैं सभी के समक्ष एक प्रकरण ये आता रहा है की माननीय उच्च न्यायालय द्वारा प्रतिदिन जो विवरण पत्र आहूत किए जाते हैं जो की नियमित एवम 10–20 साल पुराने भी होते हैं जिनमे पुराने विवरण पत्र उपलब्ध न होने अथवा उचित रखरखाव न होने के कारण वांछित विवरण पत्र तैयार करने में अधिक कठिनाई होती हैं, अपितु जब कोई व्यक्ति प्रस्तुतकार के पद पर हो जिसको साक्षियों के बयान अंकित करना, 100 से 150 आदेश पत्रिकाओं में तिथियां नियत करने और इसके उपरांत उनको लिखने जैसे विविध कार्यों के अतिरिक्त ये करना पड़े साथ ही वे साथी कर्मचारी जिनकी नई नियुक्तियां हुई हों और उनको भी ये कार्य करना पड़े जबकि इन सब कार्यों से जुड़े कोई भी प्रशिक्षण न्यायपालिका के कर्मचारी को नहीं दिए जाते। हाँ कोई त्रुटि होने पर उसको नोटिस और विभागीय जांच और दंड जैसे उपहार अवश्य दिए जाते हैं जिसमे कोई भी ढीलाई नहीं बरती जाती है।

उक्त सभी कार्यों से न्यायपालिका का कर्मचारी जो की अन्य सभी विभागों के कर्मचारियों की अपेक्षा अधिक जोश और त्याग के साथ कार्य करता है उसका मनोबल और स्वास्थ्य दोनो प्रभावित होते हैं।

उपरोक्त का सार यही है कि न्यायलयों में कर्मचारियों की कमी और बढ़ते हुए कार्यो की अधिकता को देखते हुए शायद यह सुझाव गलत न होगा कि न्यायालयों में कार्यरत कर्मचारियों के अतिरिक्त प्रत्येक जनपद के न्यायालय के लिए एक विवरण पत्र लिपिक अथवा मुंसरिम नियुक्त करने के प्रकरण को शीघ्रता से माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष रखा जाए, साथ ही भरसक प्रयत्न एवम निवेदन के साथ इस नियुक्ति हेतु अनुमोदन भी लिया जाए जिस से कि कुछ मानसिक और शारीरिक भावनाएं स्वस्थ हो सकें।

इसी बात के साथ अपने शब्दों को विराम देता हूं ।

मोहम्मद अतीक वारसी

वरिष्ठ सहायक, जनपद न्यायालय–औरैया।

अध्यक्ष, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

माँ

मौत की आगोश में जब थक के सो जाती हैं माँ, तब कही जाकर सुकू थोडा सा पा जाती हैं माँ

फिक्र में बच्चों की कुछ इस तरह घुल जाती है माँ, नौजवान होते हुए बूढी नजर आती है माँ ॥

रूह के रिश्ते की ये गहराईयां तो देखिये, चोट लगती है हमें और चिल्लाती है माँ ॥

कब जरुरत हो मेरे बच्चों को इतना सोच कर, जागती रहती हैं आखें और सो जाती है माँ ॥

हुदीयों का रस पिला कर अपने दिल के चैन को, कितनी ही रातों में खाली पेट सो जाती है माँ ॥

जाने कितनी बर्फ सी रातों मे ऐसा भी हुआ, बच्चा तो छाती पे है गीले में सो जाती है माँ ॥

जब खिलौने को मचलता है कोई गुरबत का फूल, आंसूओं के साज पर बच्चे को बहलाती है माँ ॥

फिक्र के शमशान में आखिर चिताओं की तरह, जैसी सूखी लकडियां, इस तरह जल जाती है माँ ॥

अपने आंचल से गुलाबी आंसुओं को पोंछ कर, देर तक गुरबत पे अपने अश्क बरसाती है माँ ॥

सामने बच्चों के खुश रहती है हर इक हाल में, रात को छुप छुप के अश्क बरसाती है माँ ॥

पहले बच्चों को खिलाती है सकूं-औ-चौन से, बाद मे जो कुछ बचा हो शौक से खाती है माँ ॥

मांगती ही कुछ नहीं अपने लिए भगवान से, अपने बच्चों के लिए दामन को फैलाती है माँ ॥

गर जवाँ बेटी हो घर में और कोई रिश्ता न हो, इक नए एहसास की सूली पे चढ़ जाती है माँ ॥

हर इबादत हर मोहब्बत में नहीं है इक गर्ज, बे-गर्ज, बे-लूस, हर खिदमत को कर जाति है माँ ॥

बाजूओं में खींच के आ जाएगी जैसे कायनात, अपने बच्चे के लिये बाहों को फैलाती है माँ ॥

जिन्दगी के सफर में गर्दिशों की धूप में, जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ ॥

कांपती आवाज से कहती है "बेटा अलविदा", सामने जब तक रहे हाथों को लहराती है माँ ॥

जब परेशानी में घिर जाते हैं हम कभी परदेस में, आंसुओं को पोछने ख्वाबों में आ जाती है माँ ॥

देर हो जाती है घर आने में अक्सर जब हमें, रेत पर मचले हो जैसे ऐसे घबराती है माँ ॥

मरते दम तक आ सका बच्चा ना गर परदेस से, अपनी दोनों पुतलियां चौखट पे रख जाती है माँ ॥

प्यार कहते हैं किसे और ममता भला क्या चीज है, कोई उन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ॥

(मोनिका शर्मा)

बिल कर्लक

जिला एवं सत्र न्यायालय गौतमबुद्धनगर

चींटी

बहुत पहले आप ने एक चिड़िया की कहानी सुनी होगी..जिसका एक दाना पेड़ के कंदरे में कहीं फंस गया था। चिड़िया ने पेड़ से बहुत अनुरोध किया उस दाने को दे देने के लिए लेकिन पेड़ उस छोटी सी चिड़िया की बात भला कहां सुनने वाला था... हार कर चिड़िया बढ़ई के पास गई और उसने उससे अनुरोध किया कि तुम उस पेड़ को काट दो, क्योंकि वो उसका दाना नहीं दे रहा... भला एक दाने के लिए बढ़ई पेड़ कहां काटने वाला था..फिर चिड़िया राजा के पास गई और उसने राजा से कहा कि तुम बढ़ई को सजा दो क्योंकि बढ़ई पेड़ नहीं काट रहा और पेड़ दाना नहीं दे रहा... राजा ने उस नन्हीं चिड़िया को डांट कर भगा दिया कि कहां एक दाने के लिए वो उस तक पहुंच गई है। चिड़िया हार नहीं मानने वाली थी... वो महावत के पास गई कि अगली बार राजा जब हाथी की पीठ पर बैठेगा तो तुम उसे गिरा देना,क्योंकि राजा बढ़ई को सजा नहीं देता..बढ़ई पेड़ नहीं काटता...पेड़ उसका दाना नहीं देता..महावत ने भी चिड़िया को डपट कर भगा दिया...

चिड़िया फिर हाथी के पास गई और उसने अपने अनुरोध को दुहराया कि अगली बार जब महावत तुम्हारी पीठ पर बैठे तो तुम उसे गिरा देना क्योंकि वो राजा को गिराने को तैयार नहीं... राजा बढ़ई को सजा देने को तैयार नहीं.. .बढ़ई पेड़ काटने को तैयार नहीं...पेड़ दाना देने को राजी नहीं। हाथी बिगड़ गया...उसने कहा, ऐ छोटी चिड़िया.. तू इतनी सी बात के लिए मुझे महावत और राजा को गिराने की बात सोच भी कैसे रही है? चिड़िया आखिर में चींटी के पास गई और वही अनुरोध दोहराकर कहा कि तुम हाथी की सूंढ़ में घुस जाओ...चींटी ने चिड़िया से कहा, ष्चल भाग यहां से...बड़ी आई हाथी की सूंढ़ में घुसने को बोलने वाली। अब तक अनुरोध की मुद्रा में रही चिड़िया ने रौद्र रूप धारण कर लिया...उसने कहा कि ष्मैं चाहे पेड़, बढ़ई, राजा, महावत, और हाथी का कुछ न बिगाड़ पाऊं...पर तुझे तो अपनी चोंच में डाल कर खा ही सकती हूँ... चींटी डर गई...भाग कर वो हाथी के पास गई... हाथी भागता हुआ महावत के पास पहुंचा...महावत राजा के पास कि हुजूर चिड़िया का काम कर दीजिए नहीं तो मैं आपको गिरा दूंगा....राजा ने फौरन बढ़ई को बुलाया उससे कहा कि पेड़ काट दो नहीं तो सजा दूंगा...बढ़ई पेड़ के पास पहुंचा...बढ़ई को देखते ही पेड़ बिलबिला उठा कि मुझे मत काटो.मैं चिड़िया को दाना लौटा दूंगा...!!

निष्कर्ष :– आपको अपनी ताकत को पहचानना होगा...आपको पहचानना होगा कि भले आप छोटी सी चिड़िया की तरह होंगे, लेकिन ताकत की कड़ियां कहीं न कहीं आपसे होकर गुजरती होंगी...हर शेर को सवा शेर मिल सकता है, बशर्ते आप अपनी लड़ाई से घबराएं नहीं... आप अगर किसी काम के पीछे पड़ जाएंगे तो वो काम होकर रहेगा यकीन कीजिए. हर ताकत के आगे एक और ताकत होती है और अंत में सबसे ताकतवर आप होते हैं. हिम्मत, लगन और पक्का इरादा ही हमारी ताकत की बुनियाद है..!! बड़े सपनो को पाने वाले हर व्यक्ति को सफलता और असफलता के कई पड़ावों से गुजरना पड़ता है। पहले लोग मजाक उड़ाएंगे,फिर लोग साथ छोड़ेंगे, फिर विरोध करेंगे फिर वही लोग कहेंगे हम तो पहले से ही जानते थे की एक न एक दिन तुम कुछ बड़ा करोगे!

रख हौंसला वो मंजर भी आयेगा, प्यासे के पास चलकर समंदर भी आयेगा..!
थक कर ना बैठ, ऐ मंजिल के मुसाफिर मंजिल भी मिलेगी
और जीने का मजा भी आयेगा।

ऋषि यादव
अध्यक्ष : दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश शाखा-फर्रुखाबाद

पंडित राम चंद्र शर्मा –अप्रतिम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

(Pt. Ram Chandra Sharma - A great Freedom Fighter)

पंडित राम चन्द्र शर्मा की गणना उन कुछ गिने चुने लोगो में की जा सकती है, जिनके जीवन का उद्देश्य व्यक्तिगत सुख लिप्सा न होकर समाज के उन सभी लोगो के हित के लिए अत्मोत्सर्ग रहा है। यही कारण है कि स्वतंत्रता संग्राम मे अपने अद्वितिय योगदान के पश्चात पंडित जी ने अपने संघर्ष की इति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी नही मानी । वे आजीवन पीड़ित मानवता के कल्याण के लिए जूझते रहे । पंडित जी सर्वे भवंतु सुखिनः मे विश्वास करते थे । उनकी मान्यता थी -

‘कीरति भनति भूति भुलि सोई,
सुरसरि सम सब कन्ह हित होई’

पंडित जी का जन्म 7 मार्च 1902 को ग्राम अमवा, पोस्टरू घाटी, थाना- खाम पार, जनपद-गोरखपुर (वर्तमान देवरिया जनपद) मे हुआ था। वे अपने माता पिता की अंतिम संतान थे। पंडित जी से बड़ी पाँच बहनें थी । यही कारण था की पंडित जी का बचपन अत्यंत लाड़ प्यार से बीता। यद्यपि पंडित जी उच्च्व शिक्ष प्राप्त नहीं कर सके किंतु स्वाध्याय और बाबा राघव दास के सनिध्य में इतना ज्ञानार्जन किया कि उन्हें किसी विश्वविद्यालयी डिग्री की आवश्यकता नहीं रही।

तत्कालीन परम्परा के अनुसार पंडित जी का विवाह भी बचपन मे ही ग्राम- अमावाँ से चार किलोमीटेर उत्तर दिशा मे स्थित ग्राम-दुबौलि के पं० रामअधीन दूबे जी की पुत्री श्रीमती लवंगा देवी, के साथ हो गया था किन्तु बाबा राघव दास से दीक्षा लेने के पश्चात् सभी बंधनों को तोड़कर वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। सर्व प्रथम 1927 ई. में नमक सत्याग्रह में जेल गये। सन 1928 ई० में भेंगारी में नमक कानून तोड़कर बाबा राघव दास जी के साथ जेल गये। वहाँ बाबा ने उन्हे राजनीति का विधिवत पाठ पढ़ाया । सन 1930 ई० में नेहरू जी के नेतृत्व में गोरखपुर में सत्याग्रह करते समय गिरफ्तार हुए । सन 1932 ई० मे थाना भोरे जिला सिवान (बिहार) मे गिरफ्तार हुएऔर गोपालगंज जेल में निरुध रहे। 1933 में पटना में सत्याग्रह करते समय गिरफ्तार हुए और 01 वर्ष तक दानापुर जेल में बंद रहे। 1939 में लाल बहादुर शास्त्री, डॉ० सम्पूर्णा नन्द, कमलापति त्रिपाठी के साथ बनारस में गिरफ्तार हुए। कुछ दिनों बनारस जेल में रहने के पश्चात उन्हें बलिया जेल में

स्थानांतरित कर दिया गया। 10 अगस्त 1942 को ये भारत छोड़ो आन्दोलन में गिरफ्तार हुए । जब ये जेल में ही थे, इनके पिता राम प्रताप पाण्डेय का स्वर्गवास हो गया, फिर भी अंग्रेजों ने अपने दमनात्मक दृष्टि कोण के कारन इन्हें पेरोल पर भी नहीं छोड़ा। 1945 में इनकी माता निउरा देवी भी दिवंगत हो गयीं। इनकी पत्नी श्रीमती लवंगा देवी भी स्वतंत्र भारत देखने से वंचित रही। 14 अगस्त 1947 को इनका भी निधन हो गया किन्तु पंडित जी के लिए राष्ट्र के सुख दुःख के समक्ष व्यक्तिगत सुख दुःख का अर्थ नहीं रह गया था।

पंडित जी 1947 में कांग्रेस के जिला मंत्री निर्वाचित हुए। जहाँ अन्य लोग सत्ता सुख में निमग्न थे, पंडित जी को पुकार रहा था...देश के अनेकानेक वंचित लोगों का करुण क्रंदन, और यही कारण था की पंडित जी समाजवादी आन्दोलन से जुड़ गए। 1952 में मार्क्स के दार्शनिक चिंतन से अत्यंत प्रभावित हुए और तबसे जीवन पर्यंत एक सच्चे समाजवादी के रूप में संघर्ष रत रहे ।

यद्यपि 26 अगस्त 1992 को काल के कुटिल हाथों ने पंडित जी को हमसे छीन लिया, फिर भी अपनी यशः काया से वे हमारे बीच सदैव विद्यमान हैं। पंडित जी अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं । जिनमें उनके एकलौते पुत्र श्री हनुमान पाण्डेय (अब स्वर्गीय) और तीन पुत्रियाँ श्रीमती अन्न पूर्णा देवी, श्रीमती धन्न पूर्णा (अब स्वर्गीय) और श्रीमती ललिता देवी के साथ तीन पौत्र स्वर्गीय श्री वशिष्ठ पाण्डेय, रामानुज पाण्डेय, द्वारिका पाण्डेय और दो पौत्रिया उर्मिला देवी और उषा देवी और पांच परपौत्र मनोज पाण्डेय, विनय पाण्डेय, आदित्य पाण्डेय (लेखक स्वयं), सागर पाण्डेय व कौस्तुभ पाण्डेय विद्यमान हैं।

भारत माता के ऐसे सपूत स्वतंत्रता संग्राम योद्धा को शतशः नमन.............

आदित्य पाण्डेय

सहायक अभिलेखपाल

जनपद न्यायालय श्रावस्ती

श्रद्धांजली

स्तब्ध हूँ मैं आज और व्यथित खड़ा हूँ।
आखिर क्यों छोड़ गये यूं साथ ये सोच में पड़ा हूँ।
शायद बचा हो कोई पुण्यकर्म जो आपने न किया हो।
कभी किसी प्रकार का अहित किसी का किया हो।

अब इस परिवार का 'विकास' कौन करेगा ?
कौन इस परिवार में 'प्रकाश' अब करेगा।
'हर्ष और यश' का कल्याण कौन करेगा।
'संकल्प' के भविष्य का निर्माण कौन करेगा।

हर्ष पाण्डेय
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय
झांसी

व्यथित और संतप्त जीवन संगनी के अपूर्ण सपने।
विस्मित हो, उठ पड़ती है इस एहसास के साथ
कि अब कौन है पराये और कौन है अपने।

विधि का विधान था या चाह भी परमात्मा की।
जो भी था पर यूं न बिछड़ना ------- परन्तु
किसी देवता से न संभला होगा उनका "हृदय रोग"
और विशेषज्ञ के रुप में उन्होंने किया आपका प्रयोग।

चाचा श्री स्व० डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय जी के चरणों
में समर्पित अश्रुपूर्ण श्रद्धांजली।

बसन्ती

(एक काल्पनिक कहानी)

दिसम्बर माह की हड्डी तक छू लेने वाली कड़कडाती ठण्ड़ी और उसमें हल्की-हल्की सावन के फुहार जैसी बारिश और उस बारिश में भीगती एक औरत जो कि फटे पुराने कपड़ो से अपने शरीर को ढकने का अफसल चेष्टा कर रही है, परन्तु ठण्डी उसके दाँतो की किटकिटाहट से स्पष्ट हो रहा है कि वह इस ठण्डी से बचना चाहती है। वह जिधर भी जाती लोग उसे कुत्ते की तरह दुरदुराने लगते, जैसे वह कोई इंसान नही बल्कि कोई निकृष्ठ जानवर हो।

वह दुबली पतली लड़की जाकर एक पेड़ के नीचे खड़ी होकर बारिश की कुछ बूँदो से बचती है, परन्तु तेज हवा चलने के बाद ब्याज समेत बूँदे उसके ऊपर गिरते है अर्थात पेड़ के नीचे उसका खड़ा होना या न होना लगभग बराबर है। कुछ क्षण वहाँ खड़ा होने के बाद वह आगे बढ़ती है, तो उसको एक टूटा हुआ छप्पर दिखाई देता है। जिसके अन्दर धान का पुवाल रखा रहता है। वह जाकर उसी छप्पर के नीचे बैठ जाती है, और धान के पुवाल से अपने चारो ओर पूरे शरीर को ढ़क लेती है। धीरे-धीरे उसके दाँतो की किटकिटाहट कम होती जाती है, जिससे आभास होता है कि धान के पुवाल से उसे निसंदेह कुछ राहत मिली है।

लगभग 2 घण्टे बाद बारिस बंद हो जाती है, और उसे भूख का कुछ एहसास होता है। वह धान के पुवाल को जैसे हटाकर खड़ी होती है, तभी एक बूढ़ा जो शायद उस छप्पर का मालिक था जोर से चीखा-बसन्तिया तू हमरे पैरा में बैठी रही ...तोर ई मजाल..........राम..........राम मारेश पूरा धान का पुवाल सत्यानाश कैय देहेश ....। इतना कहकर वह बूढ़ा बगल में रखा एक डण्डा उठाकर बसन्ती को मारने लगा। वह बेचारी असहाय, निर्बल, बुद्धिहीन क्या करती। वह किसी दूसरी भाषा में बडबडाने लगी जिसका कि अर्थ वह बूढ़ा नही जानता था । वह बडबडाते हुए वहाँ से भागने लगी।

थोड़ी दूर जाने के बाद वह एक सब्जी की दुकान पर रुकी और सब्जी वाले की तरफ देखकर बोली – हे...हे भगत ....हे भगत ....। और हाथों से इशारा करके बीडी मांगने लगी। भगत बसन्ती की ओर देखकर हँसा और जेब से एक बीडी निकाल कर जलाकर उसे दे दिया। वह एक मिनट के अन्दर ही पूरी बीडी को धुआँ बनाकर वायुमंडल में छोड़ दिया और फिर बोली हे...हे भगत ....हे भगत ....।

भगत बसन्ती की ओर देखकर बड़ी तेजी से डाँटा। बसन्ती कुछ क्षणो के लिए शान्त हो गयी। मगर फिर एक बार भगत से बोली भगत............भगत ....हे भगत ....। और हाथो से इशारा कर के पुनः बीडी मांगने लगी। भगत बोला अब बीडी नही है, भागो यहाँ से ....। परन्तु बसन्ती वहाँ से एक भी इंच आगे पीछे नही हुई और फिर से भगत से इशारा करके बीडी मांगने लगी। भगत ने एक बीड़ी जलाकर बसन्ती को दे दिया। बसन्ती दूसरी बीडी को भी एक मिनट के अन्दर धुआँ बनाकर अपने चारो ओर छोड़ दिया । इसके बाद वह आगे बढ़ी और एक चाय की दुकान पर रुकी और बोली राजन ....राजन ....राजन. ....राजन। चाय..............चाय................चाय राजन चाय।

राजन ने चाय ला कर एक कुल्हड़ में डालकर उसे दे दिया। वह चाय पीकर सड़क पर घूमने लगी और इधर उधर के कूड़ा-करकट, दोना, पत्तल, टूटी चप्पल आदि को उठाकर ले जाती और यहाँ-वहाँ फेक देती और फिर दूसरी चीज उठाती और उसे भी दूसरी जगह फेक देती । इस तरह शाम हो गयी। वह एक घर के सामने जाकर बैठ गयी। एक औरत अन्दर से बसन्ती को देखी । इसके बाद बाहर आकर बसन्ती से बोली-का रे

बसन्तिया खाना खाबे...। बसंती ने उस औरत को भरपूर नज़रो से देखा । वह औरत बोली बहू खाना लेती आना बसन्तिया भुखान होये ।

एक टूटी-फूटी पत्तल में चावल और चावल के बीच में छोटा सा गड्ढ़ा बनाकर उसमें सब्जी डाल दिया बसन्ती बोली -गोश्त दे ...गोश्त दे।

औरत एक भद्दी सी गाली देती हुए बोली-जौन वा तौन खाय ला....। इसके बाद पत्तल उसके सामने रख दिया । बसन्ती खाना पर टूट पड़ी। मगर उसने सब्जी जल्दी-जल्दी पूरा खा लिया और चावल छोड़ दिया । वह औरत अन्दर से और सब्जी लाई । बसन्ती ने फिर से पूरा सब्जी खा लिया और बहुत थोड़ा सा चावल खाया और खाने के बाद पत्तल को वही छोड़ कर थोडी दूर चली गयी और कुछ क्षण बाद फिर से आई और पत्तल उठाकर चली गयी।

सुबह का समय था । मै अभी सो कर उठा ही था कि तभी बसन्ती मेरे दुकान के समाने आकर खड़ी हो गयी और दूसरी भाषा में जिसमें कि हम लोग अज्ञान थे बडबडाने लगी । उसी समय एक वन विभाग का अधिकारी मेरे दुकान पर आया और बसन्ती की ऊँट-पटाँग बातो को ध्यान से सुनने लगा। मै दुकान की बेंच पर बैठा जमुवाही ले रहा था। वह अधिकारी मेरी ओर मुखातिर होकर बोला -ये औरत कहॉ से आई है ?

मै बोला - पता नही, काफी दिनो से यही पर रह रही है।

वह बोला- जानते हो कि यह कहाँ की रहने वाली है ?

मै बोला - नही..........।

वह बोला- इसकी भाशा आदिवासियो की है....ये झारखण्ड की रहने वाली है। मै वहाँ पर काफी दिनों तक रहा हूँ और इसकी भाषा से स्पष्ट जानता हूँ कि यह झारखण्ड राज्य की आदिवासी है।

मै बोला- पता नही......... हो सकता है।

वह बोला- यहाँ कैसी आई ....।

मै बोला- मै नही जानता।

वह वन विभाग का अधिकारी मुझे कनखियो से देखा और थोड़ा रुक कर बोला- किसी ट्रक वाले, स्याले का कारनामा होगा।

थोडी देर वह दुकान पर बैठा रहा इसके बाद चला गया । दो महीने बाद एक बूढ़ा आदमी गन्दा व फटे हुए कपड़े पहनकर हमारे गाँव आया और पूरे बाजार का 10 चक्कर घूम डाला और थक हार कर मेरे दुकान पर आकर बैठ गया । कुछ क्षणो बाद बसन्ती मेरे दुकान के सामने आकर चिल्लाई राजन...चाय दे........चाय दे ....।

तभी उस बूढ़े आदमी की नज़र बसन्ती पर पड़ी। उसका चेहरा कमल के फूल की तरह खिल उठा। वह बड़ी तेजी से उठा और कुछ बडबडाते हुए बसन्ती की तरफ आगे बढ़ा। बसन्ती उसे देखकर ऐसे भागी जैसे भोर को देखकर हिरन। बूढ़ा भी लाठी टेकते हुए तेजी से कदम बढ़ाकर बसन्ती को पकड़ लिया। इस समय बसन्ती उस बूढ़े से ऐसे भयभीत हो रही थी जैसे किसी बकरे को बलि के लिए ले जाया जाता हो। बसन्ती ने शेरनी जैसी फुर्ती दिखाई और बूढ़े को एक धक्का दे दिया। बूढ़ा वही सड़क पर गिर पड़ा और बसन्ती वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गयी। इन दोनों की छीना-झपटी को कुछ और लोग देख रहे थे। बूढ़ा जैसे ही गिरा तभी कुछ लोगो ने आकर बूढ़े को उठाया। आदमी जब ज्यादा कमजोर हो जाता है तो उसके आँख से आँसू निकलने लगते है, यही

गति उस बूढ़े की थी। उसके गालो पर अनगिनत पानी की बूदे गिरने लगी। कुछ ही क्षणों में वहाँ पर भीड़ लग गयी जैसे कोई जादूगर कोई जादू दिखा रहा हो। वहाँ पर उपस्थित भीड़ में सभी एक दूसरे से पूछते कि क्या हुआ......क्या हुआ...। इस समय उस बूढ़े की हालत ऐसी थी जैसे कोई बीमार आदमी जो कि जानता है कि वह कुछ ही क्षणो का मेहमान है परन्तु जहर की शीशी पीने से कांप जाता है। उसी तरह उस बूढ़े की हालत हो रही थी।

मै भी उस भीड़ में शामिल था। मैने बूढ़ो को अपनी दुकान में लाया और सब से पहले उसे गरमागरम चाय और समोसे दिये। वह बूढ़ा थोड़ी देर समोसे को देखता रहा और इसके बाद उसें खाया। इसके पश्चात-मै बूढढे से पूछा-बाबा क्या बात है आप उस पगली बसन्ती के पीछे क्यो भागे........क्यों उसे पकड़ा।

बूढढा मेरी तरफ बड़े ध्यान से देखते हुए अतीत की गहराइयों में उतारता चला गया।

मृगनयनी अर्थात् जिसको हम लोग बसन्ती के नाम से जानते है, मृग जैसी आँखे होने के कारण उसका नाम गाँव के बुर्जुगो ने मृगनयनी रखा। आदिवासियों के यहाँ जन्म होने के कारण वह बचपन से ही खुले, हरे-भरे जंगलो में अकेले घूमा करती थी। धीरे-धीरे समय बीतता चला गया। लड़की जब जवान होती है तो बाहर वालो को पहले और घर वालो को बाद में पता चलता है। इसी तरह एक दिन जंगल में मृगनयनी की मुलाकात एक शहरी बाबू से हो गया। जो शायद यहाँ पर कुछ रिसर्च करने के लिए आया हुआ था। शहरी बाबू मोहित को देखकर मृगनयनी के हृदय को प्रत्येक तार से एक ध्वनि निकली और दोनो पहली की मुलाकात में एक दूसरे को अपना दिल दे बैठे। धीरे-धीरे दोनो की रोज मुलाकात होती और जिस प्रकार धरती से निकलता पानी का स्रोत यह नही जानता कि वहाँ कहाँ जायेगा इसी तरह यह लोग भी आगे क्या अंजाम होगा इससे एकदम अंजान बने रहे।

एक दिन आदिवासी कबीलें के दो पुरुषों ने मृगनयनी को मोहित के साथ देखा लिया। इसके बाद वे लोग इस बात को कबीलें के सरदार को बताई। जब मृगनयनी मोहित से मिलकर घर आई तो उसे कबीले के लोगो ने पकड़ कर सरदार के पास ले गये। सरदार ने मृगनयनी से कहा-मृगनयनी तुमने हमारे कबीलें की परम्परा को तोड़ा है। इस लिए तुमको और इस शहरी बाबू को कबीलें वाले पत्थर मारेगें, यदि तुम लोग बच गये तो तुम्हारी भादी कबीलें के किसी पुरुष जिससे तुम चाहो कर सकती हो और शहरी बाबू सुबह सूरज उगने तक यहाँ से चला जाय।

मृगनयनी को इससे पहले यह पता नही था कि मोहित को भी ये लोग पकड़ कर लाये है। मोहित को एक नीम के पेड़ से रस्सी से बांध दिया गया था तभी कबीलें के पुरुष लोग हाथो में पत्थर ले-ले कर मृगनयनी और मोहित को चारो तरफ से घेर लिये। इस समय ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी मृग को चारो ओर से शेरों ने घेर लिया है और वह जानता हो कि इनसे बचना मुश्किल है, और इस समय इन दोनो के लिए मृत्यु और जीवन की इच्छा रखना एक ही समान थी, क्योकि जीवित रहना वही जान सकता है जो मरना जानता हो। इन दोनो के मन में सिर्फ एक ही बात थी, अगर जिन्दा रहे या मरे तो दोनो साथ-साथ।

हाय रे विडम्वना! मैने जानवरों को जानवरों का शिकार करते देखा है और यहाँ पर एक मानव दूसरे मानव का शिकार करने चला है। फिर शुरु हुआ मौत का ताण्डव । सबसे पहले एक बड़ा सा पत्थर का टुकड़ा मोहित को मारा गया। मोहित जोर से चीखा। मृगनयनी मोहित के पास दौड़ी और उससे लिपट गयी इसके बाद पत्थरो की बारिस शुरु हो गयी दोनो लोग लहुलूहान हो गये और बसन्ती बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। इसके

बाद कुछ लोगो ने मोहित को उठाकर कबीलें के बाहर फेक दिया, और बसन्ती हो उसके पिता जी उठाकर अपने घर लाये। बसन्ती रात भर बेहोशी में मोहित का नाम लेती रही। मृगनयनी के पिता जी ने रात में चुपके से मोहित को भी अपने घर लाये और रात भर उसकी दवा व सेवा की, सुबह पुनः उसे बाहर वही जंगल में कबीले के बाहर छोड़ दिये। दूसरे दिन दोपहार में बसन्ती को होश आया वह बार-बार मोहित का नाम लेकर बुला रही थी। इसलिए किसी भी एक व्यक्ति को इतना प्रेम नही करना चाहिए जीवन में उस प्रेम के अलावा और कुछ रह ही न जाये।

इस समय बूढ़े बाप को ऐसा लगा जैसे उसकी बेटी को कोई उसके पास से जबरदस्ती छीनना चाहता है। शायद एक बाप जितना प्रेम अपनी बेटी से करता है उतना प्रेम माँ अपनी बेटी से नही करती। मृगनयनी के पिता ने मृगनयनी को बहुत समझाया, परन्तु वह कुछ समझने को जैसे तैयार ही न थी। बूढ़े बाप के दिमाग में एक युक्ति आई। किसी को पराजित करना है तो प्रेम से करिए निःसदेह आप सफल होगे। मृगनयनी के पिता ने कहा बेटी आज रात्रि तुम लोग यहाँ से भाग कर कही चले जाओ, मै तुम दोनो का जंगल के बाहर स्टेशन तक पहुँचा दूँगा।

रात्रि को मृगनयनी के पिता ने मृगनयनी को लेकर मोहित के कमरे पर गये। मोहित का दरवाजा खटखटाया। मोहित ने दरवाजा खोला तो बूढ़े ने सारा प्लान बताया। मोहित तुरन्त तैयार हो गया और यह तीनो लोगो ने रेलवे स्टेशन की ओर प्रस्थान किया। रात्रि में 2:00 बजे कोई एक्सप्रेस ट्रेन थी। ट्रेन आई, बसन्ती और मोहित दोनो ट्रेन पर चढ़े जैसे ही ट्रेन ने हार्न दी तभी काबिले के 4-5 नौजवान आ गये और मोहित को ट्रेन से खीचने लगे। इसी कसमकस में एक ने चाकू निकाल कर मोहित के पेट में घोप दिया। मोहित जोर से चीखा तभी दूसरा, तीसरा, चौथा एक के बाद एक कई चाकू मोहित के पेट में मारा। मोहित तडपकर वही पर दम तोड़ दिया। बसन्ती के पिता ट्रेन में चढ़कर बसन्ती को जबरदस्ती उतारने लगे। लेकिन बसन्ती ने अपने पिता को एक झटका दिया और वह ट्रेन के बाहर गिर पड़े। मोहित को तड़पता देखकर बसन्ती बेहोश हो गयी इसके बाद वह यहाँ तक कैसी पहुँची मै नहीं जानता।

यह कहकर बूढ़ा फूट-फूट कर रोने लगा। मुझे यह समझते देर नही लगी कि यह बूढ़ा इसी बसन्ती या उस मृगनयनी का बाप है।

दिनेश कुमार गुप्ता

वरिष्ठ सहायक

जिला एंव सत्र न्यायालय, कौशाम्बी

मैं रहूँ या न रहूँ

मैं रहूं या न रहूं, मेरा पता रह जायेगा
भाख पर यदि एक भी पत्ता हरा रह जायेगा
बो रहा हूं बीज कुछ संवेदनाओं के यहां
खुशबुओं का हक अनोखा सिलसिला रह जायेगा
अपने गीतो को सियासत की जुबां से दूर रख
पंखुरी के वक्ष में कांटा गड़ा रह जायेगा
मैं भी दरिया हूं मगर सागर मेरी मंजिल नही
मैं भी सागर हो गया तो मेरा क्या रह जायेगा
कल बिखर जाऊँगा हरसू मैं भी शबनम की तरह
किरणें चुन लेंगी मुझे जग खोजता रह जायेगा।

साज़िद अली
जिला एवं सत्र न्यायालय
वाराणसी

अधूरे अल्फाज़

मोहम्मद शकील
सेशन कर्लक
जनपद न्यायालय, ऐटा

तू अपनी खूबियां ढूंढ़, कमियां निकालने के लिये लोग हैं।

अगर रखना है कदम तो आगे रख, पीछे खीचने के लिये लोग हैं।

सपने देखने ही है तो ऊंचे देख, नीचा दिखाने के लिये लोग हैं।

अपने अंदर जुनून सव चिंगारी भड़का, जलाने के लिये लोग हैं।

अगर बनानी है तो यादें बना, बातें बनाने के लिये लोग हैं।

प्यार करना है तो खुद से कर, दुश्मनी करने के लिये लोग हैं।

मन करता है

मन करता है सर-सर करती इन हवाओं के झोंकों को अपने हिय में कैद कल लूँ,
मन करता है बारिश की फुहार से अपने मन को भर लूँ,
मन करता है माटी की सोंधी खुशबू को जिय में धारण कर लूँ,
मन करता है खेतों की पगडंडी के नक्शे कदम पर चल लूँ,
मन करता है गायों की टन-टन करती घंटी को एकटक सुन लूँ,
मन करता है जो कुछ भी मन कहता है वह सब कर लूँ,
मन करता है।

निखिल शुक्ल (आशुलिपिक)
जिला एवं सत्र न्यायालय, सिद्धार्थनगर

जीत लें हम भी जहाँ
पर, जीतकर हम क्या करेगें!
जिस जहाँ में तुम न हो,
फिर उस जहाँ का क्या करेंगें!
काट लेते हैं सभी दिन,
रात का हम क्या करेंगें!
कह रहे हो भूल जाओ,
ठीक है, पर यह बताओ
जो बिताए पल साथ हमने,
उन पलों का क्या करेंगें!

सुनील कुमार "सौरभ"
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बाराबंकी

नारी के रूप

(जैन दिगम्बराचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज द्वारा रचित महाकाव्य मूकमाटी के अंश से)

'कु' यानी पृथ्वी
'मा' यानी लक्ष्मी
और
'री' यानी देने वाली...
इसमें कुछ मिला कर भाव निकलता है कि
यह धरा सम्पदा-सम्पन्ना
तब तक रहेगी
जब तक यहां 'कुमारी' रहेगी।
यही कारण है कि
सन्तों ने इन्हें
प्राथमिक मंगल माना है
लौकिक सब मंगलों में....।
ओ, सुख चाहने वालो, सुनो,
'सुता' शब्द स्वयं सुना रहा है, कि
'सु' यानी सुहावनी' अच्छाईयां
और
'ता' प्रत्यय वह
भाव-धर्म, सार के अर्थ में होता है
यानी,
सुख-सुविधाओं का स्त्रोत....सो-
'सुता' कहलाती है
यही कहती है श्रुत-सूक्तियां।

जो मह यानी मंगलमय माहौल,
महोत्सव जीवन में लाती है
'महिला' कहलाती वह।
जो निराधार हुआ, निरालम्ब,
आधार का भूखा
जीवन के प्रति उदासीन-हतोत्साहित
उस पुरूष में...
मही यानी धरती
धृति-धारणी जननी के प्रति
अपूर्ण आस्था जगाती है।
और पुरूष को रास्ता बताती है
सही-सही गन्तव्य का-
'महिला' कहलाती वह।

'स' यान सम-शील संयम है
'त्री' यानी तीन अर्थ है
धर्म, अर्थ, काम-पुरूषार्थों में
पुरूष को कुशल-संयत बनाती है
सो.... 'स्त्री' कहलाती है।

दो हित जिसमें निहित हों,
वह 'दुहिता' कहलाती है
अपना हित स्वयं कर ही लेती है,
पतित से पतित पति का जीवन भी
हित से सहित होता है, जिसमें
वह 'दुहिता' कहलाती है।
हमें समझना है
'मातृ' शब्द का महत्व भी।
प्रमाण का अर्थ होता है ज्ञान
प्रमेय यानी ज्ञेय
और प्रमातृ का ज्ञाता कहते है सन्त।
जानने की शक्ति वह
मातृ-तत्त्व के सिवा
अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नही होती।
यही कारण है, कि यहां
कोई पिता-पितामह, पुरूष नही है
सो सबकी आधार-शिला हो,
सबकी जननी
मात्र मातृतत्व है।

(शुभम जैन)
अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
शाखा - ललितपुर

'बदलते लोग, सिमटते रिश्ते'

वो भी क्या समय था न जब मेहमान बिना बताए घर आ जाया करते थे केवल चिट्ठी से ही हाल चाल पता चला करते थे अब तो कई दिनों पहले ही पता चल जाता है कि कौन कब आने को है? उससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात ये है कि लोग बिना बताए आने पर नाराज हो जाते है आजकल ,और शायद ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि अब चीजे बदल गई है और लोग भी पहले जैसे नहीं है।

पहले की तो बात ही अलग थी यार क्योंकि घर कच्चे मगर लोग सच्चे हुआ करते थे अब लोगो के घर भले ही पक्के हो गए है मगर ईमान कच्चे हो गए है झूठ और बेइमानी जैसे मानो एक अलंकार सा हो गया है जिसे लगाना सभी जरूरी समझते है। पहले के लोग साथ निभाना जानते थे मगर अब तो लोग साथ होकर भी साथ नहीं होते है आप खुद नही जान पाओगे के कौन आपके साथ है और कौन आपके खिलाफ? ऐसा सिर्फ इसलिए हुआ है क्योंकी आज इंसान खुद इंसान का महत्व नहीं समझता है और न ही दूसरे इंसान को समझना चाहता यहां किसी को घंटा फर्क नही पड़ता कि आपकी लाइफ में क्या दिक्कत है?

लोग आपकी सफलता देखकर खुश नही होते है यहां आपके अपनें ही सुनी सुनाई बातो पर विश्वास करके आपसे बुराई मान जायेंगे और रिश्तों में दूरियां बना लेंगे।

छोटी छोटी बातो को लेकर लोग इतना नाराज हो जाते है कि रिश्ता होना ना होना फिर मायने नहीं रखता और रिश्ते में दरार पड़ जाती है

अरे! एक बार किसी रूठे को मना कर तो देखो या यूंही किसी से मान कर देखो,सच्ची बहुत सुकून मिलेगा दिल में वैसे भी आजकल मौत बहुत सस्ती हो गई है इसलिए जिसको मौका मिले मना लो जिसका साथ मिले निभा जाओ।

वैसे देखा जाए तो आज के समय में थोड़ा तिरछा होना भी जरूरी है क्योंकी यहां सीधा साधा इंसान बेवकूफ समझा जाता है लेकिन फिर साधारण होने का भी अपना अलग मजा है धोखा देने वाला कभी न कभी ये जरूर सोचता है की मैंने उसके साथ गलत किया।

खैर ये मैंने 14 फरवरी को लिखा था,लिखने तो कोई प्यार वाली कविता बैठे थे मगर कलम को कुछ और मंजूर था।

सूरज कमल
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

इलाहाबाद उच्च न्यायालयः महत्त्वपूर्ण तथ्य

इलाहाबाद उच्च न्यायालय मूल रूप से ब्रिटिश राज में भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम 1861 के अन्तर्गत आगरा में 17 मार्च 1866 को स्थापित किया गया था। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ इसकी सर्वेसर्वा थी। उन दिनों सदर अदालतों को समाप्त कर बम्बई, कलकत्ता और मद्रास की तीनों प्रेसीडेन्सियों के लिए एक-एक न्यायालय के गठन की रणनीति बनी, लेकिन भारत के उत्तर भाग में ऐसा कुछ नहीं हो सका। ब्रिटिश शासन की कानूनी न्याय व्यवस्था के लिए ये रणनीति लागू करना आवश्यक था। जिसके तहत भारत के उत्तरी-पश्चिमी प्रदेशों के लिए एक उच्च न्यायालय के गठन का प्लान तैयार हुआ। उस समय महारानी एलिजाबेथ द्वारा जारी लेटर्स पेटेंट के जरिए हाई कोर्ट की नींव रखने की पहल हुई और इंडियन हाई कोर्ट ऐक्ट 1861 के तहत, 17 मार्च 1866 को आगरा में मौजूदा इलाहाबाद कोर्ट तैयार हुआ।

इलाहाबाद हाई कोर्ट की स्थापना से पहले 1856 में ही अवध कोर्ट लखनऊ अस्तित्व में आ चुका था। इसे 1925 में चीफ कोर्ट आफ अवध के नाम से जाना जाने लगा। 25 फरवरी 1948 को यूपी विधानसभा ने एक प्रस्ताव पारित कर राज्यपाल द्वारा गवर्नर जनरल को यह अनुरोध किया कि अवध चीफ कोर्ट लखनऊ और इलाहाबाद हाई कोर्ट को मिलाकर एक कर दिया जाए। इसका परिणाम यह हुआ कि लखनऊ और इलाहाबाद के दोनों (प्रमुख व उच्च) न्यायालयों को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के नाम से जाना जाने लगा। 1948 में हाई कोर्ट ने एक अमलगमेशन आर्डर पारित किया। जिसके चलते इसे इलाहाबाद हाई कोर्ट की बेंच के रूप में स्वीकृति मिल गई।

इलाहाबाद हाई कोर्ट में स्थाई न्यायामूर्तियों की संख्या बढ़ा दी गई है। हाई कोर्ट में अब कुल स्वीकृत 160 पदों में से 120 जज स्थाई होंगे और 40 अतिरिक्त न्यायाधीशों के पद रहेंगे। अभी तक यह संख्या 76 स्थाई व 84 अतिरिक्त न्यायाधीशों की थी। यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय एशिया का सबसे बड़ा न्यायालय है। हाई कोर्ट इलाहाबाद देश की जनसंख्या के छठवें हिस्से की सेवा कर रहा है। अपने 150 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कई फैंसले देकर लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा की है। समय समय पर अन्य ऐतिहासिक फैंसले भी चर्चा का विषय बनते रहे हैं। आशा है कि माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद इसी निरन्तरता के साथ आजाद भारत में विधि इतिहास की दिशा और दशा को निर्धारित करता रहेगा।

विजय कुमार पाण्डेय
जिला एवं सत्र न्यायालय
बुलन्दशहर

सदा

प्रभात शुक्ल
(असिस्टेंट रजिस्ट्रार)
मा० उच्च न्यायालय, लखनऊ

कितनी बोझिल ये तन्हाई है
दिल खामोश है और सौदाई है
नादानियों ने तार तार कर दिया
पर सकून से हमें मिली रौशनाई है
कि हमें रूकना नहीं बढ़ते जाना है
कई बार भीतर से ये आवाज़ आई है
ज़रूरी नहीं हमें अपनी मंज़िल मिले
भुलावों से शायद हमने शिफ़ा पाई है
हो ना हो वो भी समझ गया होगा ज़रूर
कि हर हाल में हमने रस्में दुनिया निभाई है

शैलेन्द्र कुमार चौधरी
सेवानिवृत पेशकार
जनपद न्यायालय, उन्नाव

तेरी नजरो का है शुक्रिया, मुझे झुक के चलना सिखा दिया ।
इस उम्मीद में खुश है जिंदगी, जो किया है मैने सही किया ।

यादें तेरी जो मेरे दिल में थी, उन्हे आसुवो ने बहा दिया ।
अब और क्या मेरे पास है,जो था वो सब लुटा दिया ।।

अब क्यूं करे उसे याद हम, जो चाहा उसने नही दिया।
क्या कमी थी मेरे प्यार में, जो तूने मुझको ये सिला दिया।

है ख़ामोश सी मेरी जिंदगी, कुछ तो खुदा ने रहम किया ।
मेरा दिल नही क्यूं ये मानता, इक बेवफा से वफा किया ।।

खो गई वो...चिट्ठियाँ...

जिनमे लिखने के सलीके छुपे होते थे
कुशलता की कामना से शुरू होते थे
बड़ों के चरणस्पर्श पर ख़त्म होते थे!
और बीच में लिखी होती थी जिंदगी...
नन्हें के आने की खबर
मां की तबियत का दर्द
और पैसे भेजने का अनुनय
फसलों के खराब होने की वजह!
कितना कुछ सिमट जाता था
एक नीले से कागज में....
जिसे नवयौवना भाग कर सीने से लगाती और
अकेले में आंखों से आंसू बहाती!
मां की आस थी
पिता का संबल थी
बच्चों का भविष्य थी
और गांव का गौरव थी ये चिट्ठियाँ!
डाकिया चिट्ठी लाएगा
कोई बांच कर सुनाएगा
देख देख चिट्ठी को
कई कई बार छू कर चिट्ठी को
अनपढ़ भी एहसासों को पढ़ लेते थे!

अब तो स्क्रीन पर अंगूठा दौड़ता है
और अक्सर ही दिल तोड़ता हैं
मोबाइल का स्पेस भर जाए तो
सब कुछ दो मिनिट में डिलीट होता है!
सब कुछ सिमट गया छै इंच में
जैसे मकान सिमट गए फ्लैटों में
जज्बात सिमट गए मैसेजों में
चूल्हे सिमट गए गैसों में,
और इंसान सिमट गए पैसों में।

श्री नारायण
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बदायूं

मरकहवा गुरुजी

बदलते परिवेश मे अब नहीं दिखते
गुस्ताखियों के लिए मुर्गा बनाने वाले गुरुजी,
कान पकड़कर ... ...
उठक-बैठक करवाने वाले गुरुजी
एक दूसरे को आमने-सामने कर,
तमाचा मरवाने वाले गुरुजी ... ...
कान और गाल
एक साथ लाल करने वाले गुरुजी
नही दिखते मरकहवा गुरुजी और
मारने-पीटने के बाद घर जाकर कान
फूकने वाले गुरुजी भी ... ...
ऐसे गुरुजी भी नही दिखते जिन्हे देखकर हम
काँप जाया करते थे ... ...
ऐसे गुरुजी भी नहीं दिखते जिनके लिए हम
चलती साइकिल खड़ी कर, हाथ जोड़ लिया करते थे ...
जुल्फी, काजल, नाखून पर ध्यान रखने वाले गुरुजी
भी अब नही दिखते ... ...
बचपन में ... ...
हम ऐसे परशुराम गुरुओं को अलग से उपनाम ... ...
चरमहवा, करियवा, नकटेढ़वा ... ...
देकर कुवचन ही बोला करते थे,
यह अच्छा भी लगता है। पर मित्रो बचपन तो बचपन ठहरा ... ...
मान्यताएं-परिभाषाएं अलग थी, आज अगर मूल्यांकन करे तो
सच यह है कि यही गुरु अनुशासन बनाए रखते थे,
समय का, सदाचार का, साथ ही सद्बुद्धी और सद्विचार का ... ...
इन्होने भले ही उस समय हमसे कुछ रुक्ष सा व्यवहार किया है
पर इन्होने ही हमे थपकी देकर, हमें आकार दिया है ... ...
बचपन मे ही बहुत कुछ सिखाने का उपकार किया है।
मित्रों जीवन में हर एक क्रोधी गुरु स्वीकार है।
जिसकी ठुकाई-पिटाई से जीवन में सदाबहार है ।।

सचिन शर्मा
सत्र लिपिक
जनपद न्यायालय, जौनपुर

एक नजर में

उत्तर प्रदेश में सरकार गठन के पश्चात् माननीय मुख्य मंत्री महोदय से शिष्टाचार भेंट कर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ० नृपेन्द्र सिंह

उत्तर प्रदेश सरकार में उप मुख्यमंत्री मा० बृजेश पाठक जी से शिष्टाचार भेंट कर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए संघ के पदाधिकारीगण

उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री मा० चौधरी लक्ष्मी नारायण जी से शिष्टाचार भेंट कर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए संघ के पदाधिकारीगण

जिला एवं सत्र न्यायालय, बस्ती में कार्यरत श्री अमरदीप जी, श्री दिनेश चन्द्र गौड़ जी एवं श्री सीताराम जी के अवकाश प्राप्ति दिवस पर विदाई समारोह की कुछ झलकियां .....

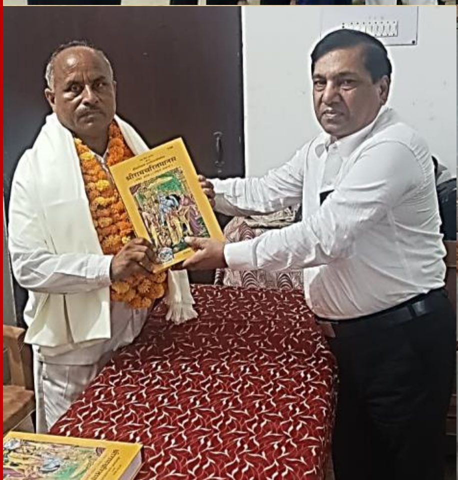

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश की शाखा मुरादाबाद में नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह की कुछ झलकियां (दिनांक 21.05.2022)

बच्चों
का
कोना

रुद्र सिंह

सुपुत्र श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा- भदोही

संपदा सिंह

सुपुत्री श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा- भदोही

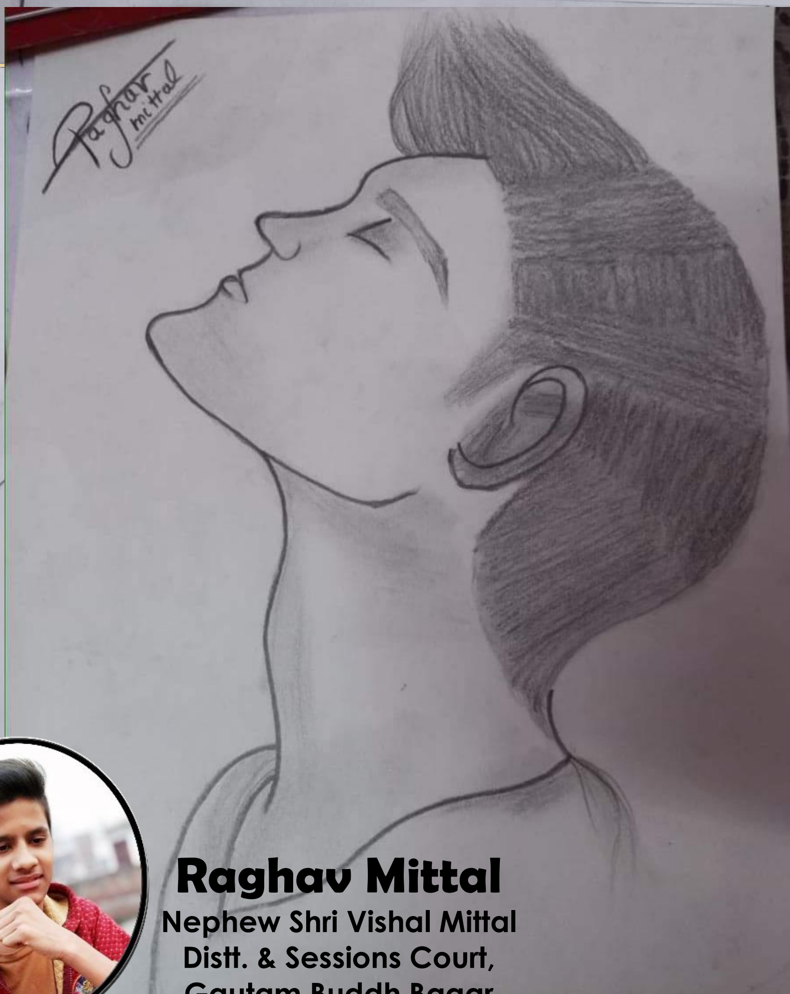

Raghav Mittal
Nephew Shri Vishal Mittal
Distt. & Sessions Court,
Gautam Buddh Bagar

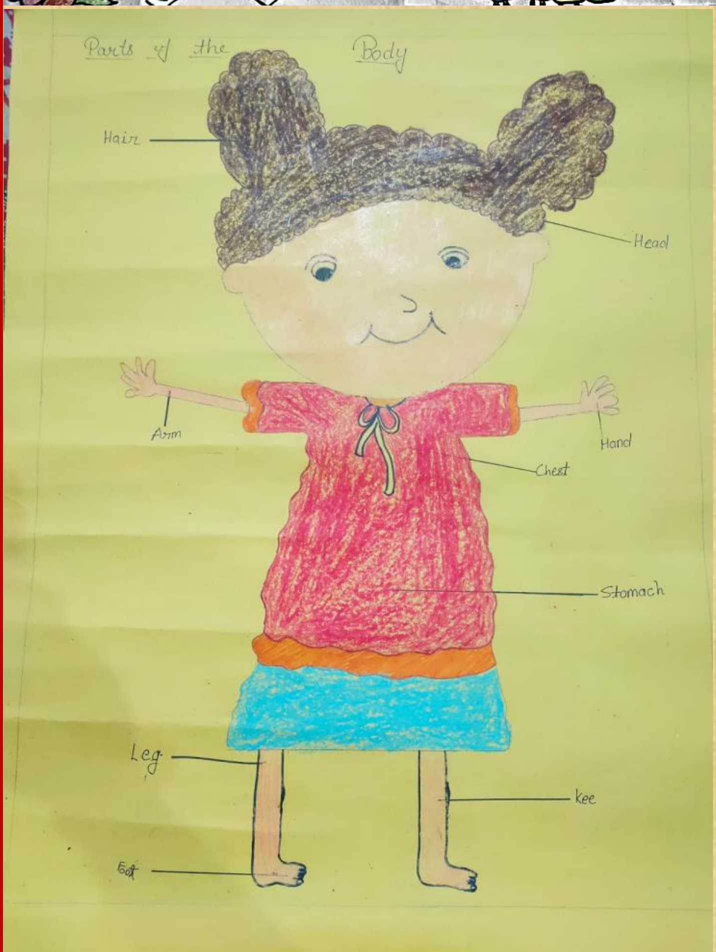

भव्या शुक्ला
क्लास–01
सुपुत्री श्री भागवत शुक्ल
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

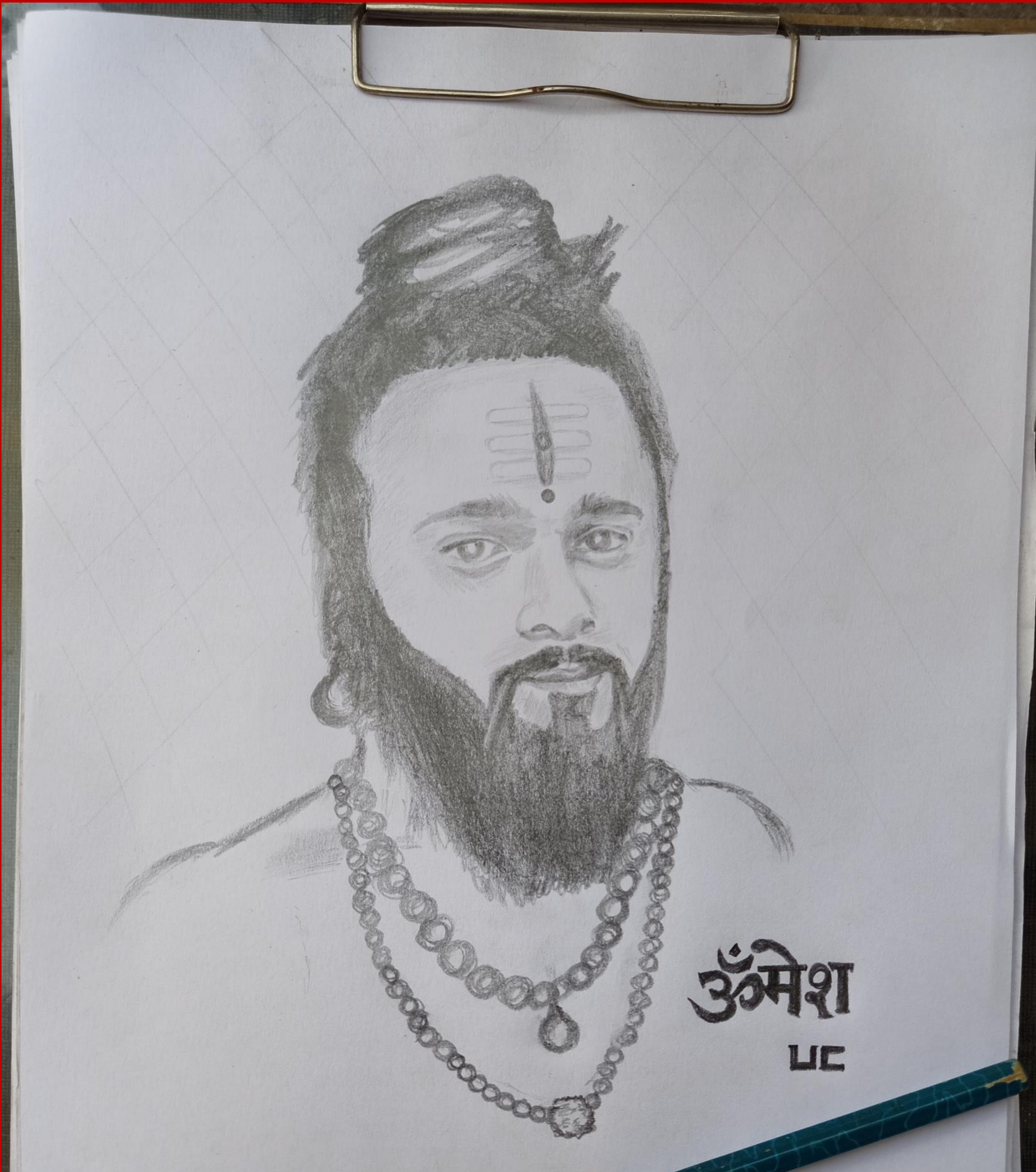

शोभित कुमार जायसवाल
अनुज श्री उमेश चन्द्र जायसवाल
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

बृज की यात्रा

दोपहर का समय, प्रणव राजस्थान के मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन करके मथुरा पहुँचा। आलस्य की परिसीमा लांघ गाड़ी में बैठने मात्र से ही इतना थक गया था कि कमरे में घुसते ही बिस्तर पर पसर गया। फिर कब शाम हो गई उसे पता भी नहीं चला। 'बृज की शाम और बृज में श्याम का नाम' इससे सुंदर स्थिति कभी नहीं हो सकती, वह यही सोचकर मंद-मंद मुस्कुरा रहा था। प्रणव कुटुम्ब सहित बृजदर्शन करने को अग्रसर हुआ। वो जिस किसी को भी देखता उसे सभी बृज में रजे हुए नजर आते। तभी राधे-कृष्ण करते हुए एक भिखारी कृष्णनाम रस मदिरा पिलाकर उससे कब पैसे लेकर चलता बना उसे पता भी नहीं चला।

मंदिर पे मंदिर। काशी के बाद उसे वृंदावन की गलियां सबसे अधिक प्यारी लग रही थीं।

लस्सी के ऊपर मलाई की परतें,
गोरों के माथे पर श्याम की मूरत,
मथुरा का पेड़ा,
गोकुल की मिश्री,
वन की वो वृंदा,
बरसाना की राधे,
गायों का चरना और
यमुना का झरना
उसे बृज में रजे दे रहा था।

अनन्य शुक्ल
कक्षा-10
सुपुत्र श्री अतुल शुक्ल
अनुभाग अधिकारी
मा० उच्च न्यायालय, लखनऊ

शाम हुई, वो चाय को अपने लखनवी अंदाज में चुस्की ले ले कर पी रहा था। बैठा बृज में था पर याद अपने अवध की आ रही थी। तभी एक सज्जन उसको बताने लगे कि बृज के हर एक प्राणी की सांसो में कृष्ण बसे हैं। उसने साधु जैसी मुद्रा में उस वाक्य का समर्थन किया और बोला सही कहते हैं आप। बृज में ही नहीं हर एक प्राणी की सांसों में श्याम बसे हैं पर बुरा न माने तो एक बात कहूँ।

जिस प्रकार हृदय के कंपन से हमारे शरीर को जीवन मिलता है उसी प्रकार श्रीराम रूपी हृदय से मेरे शरीर को श्रीकृष्ण रूपी जीवंतता प्राप्त होती हैं।

आप बृजवासी हैं और मैं अवधी हूँ। मेरे कण कण में मेरे प्रभु विराजमान हैं।

चाय खत्म हो गयी थी रात का समय था, प्रणव पुनः बृज में रजने वृंदावन की गलियों में घूमने चला गया।

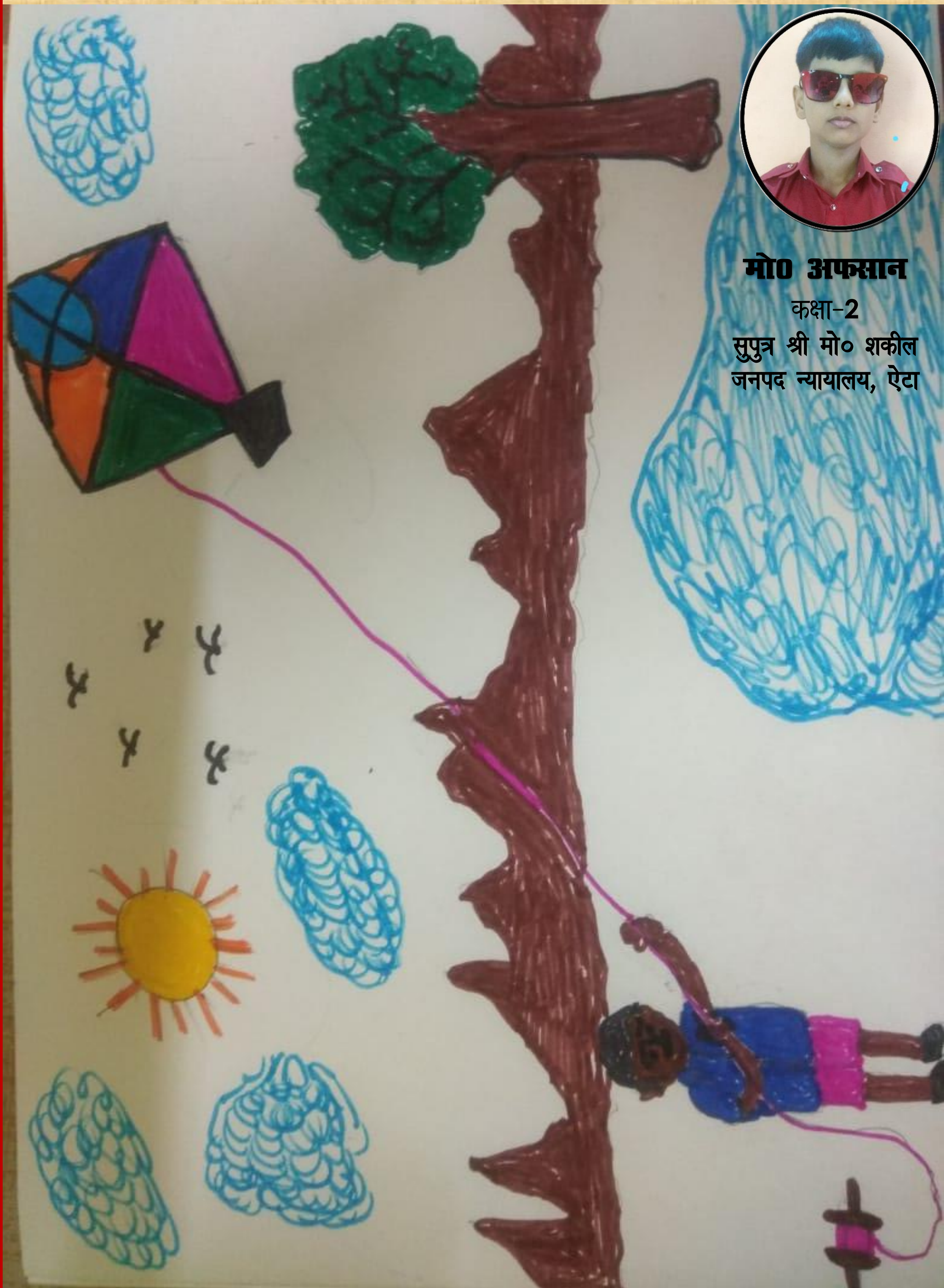

मो0 अफसान

कक्षा-2

सुपुत्र श्री मो० शकील

जनपद न्यायालय, ऐटा

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश

(राजाज्ञा सं0 1083/7-137, 17/27-1928 तथा संख्या 99/7139, दिनांक 22 जनवरी 1931 द्वारा मान्यता प्राप्त)

'उद्घोष' त्रैमासिक ई-पत्रिका

(पंचम संस्करण)

अप्रैल 2022 - जून 2022

मुख्यालय : 15 -A अभिषेक पुरम, जानकी पुरम विस्तार, लखनऊ (उ0प्र0) – 226021